तेनजिंग नोरगे

दुर्गा प्रसाद शुक्ल

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
फरवरी 1989
माघ 1910

PD 15T - S.D.

प्रकाशन सहयोग

सी.एन. राव: अध्यक्ष प्रकाशन विभाग

प्रभाकर द्विवेदी: मुख्य संपादक **यू.प्रभाकर राव**: मुख्य उत्पादन अधिकारी

विनेश सक्सेना: संपादक **डी. साई प्रसाद**: उत्पादन अधिकारी

शर्मा वत्त: सहायक संपादक **प्रमोद रावत**: उत्पादन सहायक

4.90

प्रकाशन विभाग के सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित, ग्राफिक कम्पोज़र्स, 45/- सेन्ट्रल मार्केट, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली 110029 द्वारा फोटो कम्पोज़ होकर राकेश प्रेस, ए-7, नारायण इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ II, नई दिल्ली 110028 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अच्छे शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रमो और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की दिशा मे हमारी परिषद् पिछले पच्चीस वर्षो से कार्य कर रही है। हमारे कार्य का प्रभाव भारत के सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशो में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पडा है और इस पर परिषद् के कार्यकर्ता संतोष का अनुभव कर सकते है।

किन्तु हमने देखा है कि अच्छे पाठ्यक्रम और अच्छी पाठ्यपुस्तकों के बावजूद भी हमारे विद्यार्थियों की रुचि स्वतः पढ़ने की ओर अधिक नही बढ़ती। इसका एक मुख्य कारण अवश्य ही हमारी दूषित परीक्षा प्रणाली है जिसमें पाठ्यपुस्तकों में दिए गए ज्ञान की ही परीक्षा ली जाती है। इस कारण बहुत ही कम विद्यालयों मे कोर्स के बाहर की पुस्तकों को पढने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है लेकिन अतिरिक्त पठन मे बच्चो की रुचि न होने का एक बडा कारण यह भी है कि विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए कम मूल्य की अच्छी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नही हैं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ काम प्रारंभ हुआ है पर वह बहुत ही नाकाफी है।

इस दृष्टि से परिषद् ने बच्चो के लिए पुस्तक लेखन की दिशा में एक महत्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की है। इसके अंतर्गत "पढ़ें और सीखें" शीर्षक से एक पुस्तकमाला तैयार करने का विचार है जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए सरल भाषा और रोचक शैली में अनेक विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकें तैयार की जाएंगी। हम आशा करते हैं कि 1989 के अत तक हम निम्नलिखित विषयों पर हिन्दी में 100 पुस्तकें प्रकाशित कर सकेंगे।

(क) शिशुओं के लिए पुस्तकें
(ख) कथा साहित्य

(ग) जीवनियाँ
(घ) देश-विदेश परिचय
(ङ) सांस्कृतिक विषय
(च) वैज्ञानिक विषय
(छ) सामाजिक विज्ञान के विषय

हम पुस्तकों के निर्माण में लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर भाषा, शैली और विषय-विवेचन की दृष्टि से सामूहिक विचार करके इसे अंतिम रूप दिया जाएगा।

परिषद् इस माला की पुस्तकों को लागत-मूल्य पर ही प्रकाशित कर रही है ताकि वे अपने देश के सभी कोनों में पहुँच सकें। भविष्य में इन पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की भी योजना है।

हम आशा करते हैं कि शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्य की भांति ही परिषद् की इस योजना का भी व्यापक स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखन के लिए श्री दुर्गा प्रसाद शुक्ल ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया जिसके लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। जिन-जिन विद्वानों, अध्यापकों और कलाकारों से इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में हमें सहयोग मिला है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

परिषद् में यह योजना प्रोफेसर अनिल विद्यालंकार के मार्ग-दर्शन में चल रही है। उनके सहयोगियों में श्रीमती संयुक्ता लूदरा, डा. रामजन्म शर्मा, डा. सुरेश पाण्डेय, डा. हीरालाल बाछोतिया और डा. अनिरुद्ध राय सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। विज्ञान की पुस्तकों के लेखन का कार्य हमारे विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के डा. रामदुलार शुक्ल देख रहे हैं। योजना के संचालन में डा. बाछोतिया विशेष रूप से सक्रिय रहे हैं। मैं अपने सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

हम माला की पुस्तकों पर बच्चों, अध्यापकों और बच्चों के माता-पिता की प्रतिक्रिया का स्वागत करेंगे ताकि उनसे इन पुस्तकों को और भी उपयोगी बनाने में हमें सहयोग मिल सके।

पी.एल. मल्होत्रा
निदेशक

गांधी जी का जन्तर

तुम्हे एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगो को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे है और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

विषय सूची

चोमो-लुंगमा : उस पर पक्षी भी नहीं उड़ सकता

धूप में चमकते उँचे-उँचे पहाड़। बर्फ की चादर लपेटे। उन्हीं पहाड़ों के बीच एक और पहाड़ है। लगता है, वह आसमान छू रहा है। कभी बादलों में घिरा। कभी धूप में चमकता।

प्रतिदिन इस पहाड़ को देखता है। वह अचरज से भर जाता है। गाँव वाले इस पहाड़ का आदर करते हैं। मन ही मन उसकी पूजा करते हैं। एक दिन वह अपनी माँ से पूछता है — 'माँ, इस पहाड़ का नाम क्या है?'

'बेटा, वह चोमो-लुंगमा है। सारे विश्व की जननी, देवी। वह पवित्र है। वहाँ देवता रहते हैं। वह बहुत ऊँचा है। इतना ऊँचा कि कोई पक्षी तक उसके ऊपर नहीं उड़ सकता।

बेटे को और भी अचरज होता है। इतना ऊँचा पहाड़! कोई पक्षी तक उस ऊपर नहीं उड़ सकता!

भविष्य को कोई नहीं जान पाया है। उस किशोर को भी अपने भविष्य का पता नहीं था। तब वह क्या जानता था-एक दिन वह उसी पहाड़ की चोटी पर चढ़ेगा। सारी दुनिया में उसका नाम हो जाएगा। लोग उससे प्रेरणा लेंगे। कहेंगे-उसने असंभव को संभव कर दिखाया। सबसे ऊँचे पर्वत पर चढ़नेवाला वह पहला आदमी बना।

चोमो-लुंगमा

अर्थात् माऊंट एवरेस्ट। इस पर्वत शिखर को सारी दुनिया इसी नाम से जानती है। पर कुछ लोगों के लिए वह चोमो-लुंगमा

है। चोमो लुंगमा यानी 'विश्व की जननी, देवी'। ये लोग इसी पहाड़ के आसपास रहते हैं। दुनिया उन्हें एक नाम से ही जानती है। यह नाम है, शेरपा। लोग 'शेरपा' का मतलब कुली से लगाते हैं। शेरपा यानी कुली, शेरपा यानी 'गाइड'। पहाड़ों पर रास्ता बतलाने वाला। पर शेरपा का यह मतलब सही नहीं है। शेरपा एक जाति का नाम है। एक समुदाय का नाम है। ये लोग पूर्वी हिमालय में ऊँचे स्थानों पर रहते हैं।

वह किशोर भी शेरपाओं में से एक था। तब उसका नाम गाँव के लोग ही जानते थे। पर आज? आज सारी दुनिया उसका नाम जानती है। उसका नाम एवरेस्ट से जुड़ा हुआ है। एवरेस्ट का नाम लेते ही उसका नाम याद आता है। उसका नाम है तेनजिंग नोरगे।

तेनजिंग नोरगे।

एवरेस्ट-विजेता।

एडमंड हिलेरी के साथ एवरेस्ट पर चढ़ने वाला विश्व का पहला व्यक्ति।

सन् 1953 तक एवरेस्ट पर कोई नहीं चढ़ पाया था। यों, कई लोगों ने उस पर चढ़ने की कोशिश की थी। कई लोगों ने इस प्रयास में अपने प्राण भी गँवा दिए थे।

एवरेस्ट एक चुनौती बना हुआ था। मनुष्य के साहस के लिए एक चुनौती। लगता था, एवरेस्ट सदा अविजित रहेगा। कोई उस पर नहीं चढ़ पाएगा। पर मनुष्य में एक खूबी है। वह कभी हार नहीं मानता। हर असफलता उसे प्रेरणा देती है। वह असफलता को सफलता की सीढ़ी मानता है। वह अपनी गलतियाँ ढूँढ़ता है। उन्हें दूर करता है। फिर दुगुने उत्साह से नया प्रयत्न करता है। वह हार नहीं मानता। और एक दिन विजयी होता ही है।

तेनजिंग नोरगे ने भी एवरेस्ट पर चढ़ने की कई बार

कोशिश की। सफल नहीं हुए। पर वे निराश भी नहीं हुए। कोशिश करते ही रहे। और एक दिन वे सफल हो ही गए।

वह एक महत्वपूर्ण दिन है—इतिहास में सदा के लिए अमर। यह दिन था—29 मई 1953 का। इसी दिन मनुष्य ने एवरेस्ट पर विजय पाई थी।

आज तेनजिंग हमारे बीच नहीं हैं। पर उनका जीवन हमें प्रेरणा देता है पर्वतों पर चढ़ने की, बाधाओं से जूझने की, कभी निराश न होने की।

कैसा था तेनजिंग नोरगे का जीवन? कैसा था उनका बचपन?

सोलो खुम्बु : दो गाँव-एक नाम

नेपाल। हमारा पड़ोसी देश। हिमालय की पहाड़ियों के बीच बसा। उत्तर पूर्वी नेपाल में कई गांव हैं। पहाड़ों के बीच बस इन्हीं गांवों में दो गांव हैं-सोलो और खुम्बू। पर लोग उनका नाम एक साथ लेते हैं। मानों यह एक गांव का नाम है। वास्तव में ये जिलों के भी नाम हैं। सोलो एक जिला है, और खुम्बू दूसरा। सोलो दक्षिण में है। कम ऊँचाई पर। खुम्बू ज्यादा ऊँचाई पर है। तेनजिंग नोरगे इसी खुम्बू के निवासी थे।

उनके पूर्वज तिब्बत के रहने वाले थे। वे हिमालय के दर्रों से होकर नेपाल आए थे। वे खुम्बू में ही बस गए। खुम्बू बहुत ऊँचाई पर है। गगनचुंबी पहाड़ों के बहुत पास। बहुत कुछ तिब्बत के समान। तेनजिंग और उनके जैसे शेरपा खुम्बू के इसी उत्तरी इलाके से आए थे। सोलो-खुम्बू से दूधकोसी बहती है। दूधकोसी अर्थात् दूध की नदी। यह नदी कहाँ से आती है?

एवरेस्ट के आसपास पहाड़ हैं। बर्फ से ढँके। दूधकोसी इसी बर्फीले प्रदेश से आती है। कई धाराओं में। गहरी घाटियाँ। खतरनाक खड्ड। कहीं सीधी-सपाट, कहीं आड़ी-तिरछी पगडंडियाँ। संकरे-झूलते पुल। उन पर कष्टों से भरा सफर। हर पग पर खतरा। काठमांडू-नेपाल की राजधानी। वहाँ तक जाने का यही एक मार्ग।

तेनजिंग नोरगे ने अपनी आत्मकथा में लिखा है—"मेरा प्रदेश कठोर और पथरीला है। जलवायु तीखी है। फिर भी हमारी

खेती है। चरागाह हैं। आठ से दस हजार की ऊँचाई पर गेहूं उगाया जाता है। सोलो में गेहूं ज्यादा होता है। चौदह हजार फुट की ऊँचाई पर आलू पैदा होता है। जौ भी होता है। आलू हमारी सबसे बड़ी उपज है। आलू ही हमारा मुख्य खाद्य पदार्थ है। कुछ जमीन पर सब का अधिकार है। कुछ जमीन निजी है। कई परिवारों की जमीन अलग-अलग जगहों पर है। बुआई और कटाई के लिए वे ऊपर से नीचे आते हैं। लोग अपने मवेशियों के साथ यात्रा करते हैं। इन मवेशियों में होते हैं-भेड़, बकरियाँ और याक। इनमें याक का बड़ा महत्त्व है। उनसे हमें वस्त्रों के लिए ऊन मिलता है। जूतों के लिए चमड़ा ईंधन के लिए गोबर। भोजन के लिए दूध, मक्खन और पनीर। सभी हिमालयी लोगों के लिए याक जीवन का महान अधार है। उसे जिंदा रहने के लिए याक से सारी चीज़ें मिल जातीं हैं।

सोलो-खुम्बू में कोई नगर नहीं है। कस्बा तक नहीं है। खुम्बू में सबसे बड़ा एक गाँव है। उसका नाम है नामचे बाजार। घाटियों में कई गाँव बसे हैं। इनके नाम हैं-खुमजुंग, पांडाबोचे, दामदंग, शाक-सुम, शिमबुंग और थामे। इन गांवों में घर पत्थरों के बने हैं। इनकी छतें लकड़ी की हैं। दरवाजे और खिड़कियाँ भी लकड़ियों की हैं। खिड़कियों में कांच के पल्ले नहीं होते। अधिकांश घर दो मंजिला हैं। निचली मंजिल में मवेशी रखे जाते हैं। स्टोर होता है। भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ होती हैं। इनसे ऊपर की मंजिल में जाने का रास्ता होता है। ऊपर की मंजिल में लोग रहते हैं।

जन्म: कब और कहाँ?

सोलो-खुम्बू में ही एक गांव है थाम। तेनजिंग नोरगे का परिवार यहीं रहता था। थामे में ही तेनजिंग पले और बढ़े। पर

उनका जन्म थामे में नहीं हुआ था। उनका जन्म त्सा-चू नामक स्थान में हुआ था। यह महान पर्वत मकालू के पास है। एवरेस्ट का वहाँ से केवल एक दिन का रास्ता है। त्सा-चू का अर्थ है—उष्ण निर्झर। गरम पानी का झरना। यह एक पवित्र स्थान है।

कहानियों में इतिहास भी छिपा होता है। त्सा-चू और चांग-ला के बारे में भी कई कहानियाँ हैं। ऐसी ही एक कहानी यह है।

पुराने जमाने की बात है। दो राजा थे। एक का नाम था—ग्यालबो वांग। दूसरे का -ग्यालबो खुंग। किसी बात पर दोनों में विवाद हो गया। युद्ध ठन गया। यह युद्ध त्सा-चू और चांग के पास हुआ। इस युद्ध में ग्यालबो खुंग की विजय हुई। उसने अपने सिपाहियों में, सरदारों में जमीन बांटी। एक योद्धा को चांग-ला के पास जमीन मिली। योद्धा ने अपने नाम के आगे चांग-ला लगा लिया। आज भी कई लोगों के नाम के साथ उनके शहर का नाम जुड़ा हुआ रहता है। उस योद्धा के वंशजों ने भी यही नाम अपना लिया। इसी वंश में तेनजिंग नोरगे का जन्म हुआ।

तेनजिंग का जन्म कब हुआ? बतलाना जरा कठिन है। इसका एक कारण है। सोलो-खुम्बू में तिब्बती पंचांग चलता है। उसी से काल गणना की जाती है। उसमें वर्षों के लिए संख्या नहीं होती। उसमें वर्षों के नाम होते हैं। ये नाम पशु-पक्षियों के नामों पर होते हैं। जैसे अश्व-वर्ष, चीता-वर्ष, वृषभ वर्ष, सर्प-वर्ष, पक्षी-वर्ष। ऐसे कुल बारह वर्ष होते हैं। इनमें छः वर्ष नर-वर्ष हैं। शेष छः मादा-वर्ष हैं। जब एक क्रम पूरा हो जाता है तो फिर दूसरा शुरू होता है। कई बरसों तक तेनजिंग को अपनी उम्र का पता ही नहीं था। बस, एक बात ही मालूम थी। वह यह कि वे योआ-वर्ष में पैदा हुए थे। योआ यानी खरगोश। यह चक्र चलता

रहता है। इसलिए ईस्वी सन् के साथ उसकी तुलना कठिन है। तेनजिंग के अनुसार उनका जन्म शायद 1914 में हुआ था।

ईस्वी सन् बतलाना भले कठिन हो, पर तेनजिंग को अपने जन्म की ऋतु याद थी। उनका जन्म मई के दूसरे पखवाड़े में हुआ था। यह समय उनके लिए सदैव शुभ रहा। उनकी जिंदगी में मई का दूसरा पखवाड़ा हमेशा महत्वपूर्ण रहा। कैसे? सन् 1952 की बात है, मई का दूसरा पखवाड़ा था। उस वर्ष भी एवरेस्ट पर एक अभियान-दल गया था। उसमें प्रसिद्ध पर्वतारोही लैम्बर्ट थे। उनके साथ तेनजिंग भी थे। 28 मई की बात है। वे लोग एवरेस्ट पर लगभग चढ़ गए थे। पर शिखर तक नहीं चढ़ पाए। लेकिन पहली बार कोई मनुष्य उस ऊँचाई तक पहुँचा था। अंततः उन्हें लौटना पड़ा। पर वे निराश नहीं थे। एक आशा थी, मन में एक संकल्प था।–'हम फिर आएंगे।' और ठीक एक वर्ष, एक दिन बाद की बात है। वे हिलेरी के साथ एवरेस्ट पर थे।

29 मई: एक ऐतिहासिक दिन।

हर 29 मई को एवरेस्ट विजय की वर्षगांठ मनायी जाती रहेगी। इसलिए तेनजिंग ने भी 29 मई को ही अपना जन्म–दिन मान लिया।

तेनजिंग नोरगे की माँ का नाम है, किन जोम। पिता का चांग–ला मिंगमा। उनकी तेरह संतानें हुईं। सात पुत्र। छह पुत्रियाँ। तेनजिंग माता–पिता की ग्याहरवीं संतान थे।

सोलो–खुम्बू में जीवन बहुत कष्टकर था। तेनजिंग नोरगे के अनुसार, "वहां मौत हमेशा मंडराती रहती थी। मेरे भाई–बहनों में केवल चार बचे। एक मैं। तीन बहनें।" सोलो–खुम्बू दुर्गम प्रवेश में है। वहां के लोग बहुत कम मैदानों में आते हैं। कारण, रास्ता खतरनाक है। कठिनाइयों से भरा। जो लोग मैदानों में आते, वे बहुत कम वापस लौटते। मैदानों में ही बस जाते। काठमांडू में रहने लगते। या फिर दार्जिलिंग चले

जाते। तेनजिंग के माता-पिता ने कभी बाहर की दुनिया नहीं देखी। ज्यादा से ज्यादा वे काठमांडू तक गए। या फिर तिब्बत में रोंगबुक मठ में गए। रोंगबुक मठ में तेनजिंग के मामा मुख्य लामा थे। बौद्ध मठों में पूजा–पाठ करने वाले लोगों को लामा कहते हैं।

तेनजिंग अर्थात 'भाग्यवान धर्म समर्थक'

हर नाम का एक अर्थ होता है। कुछ नाम देवी–देवताओं के नाम पर रखे जाते हैं। कुछ गुणों या विशेषणों के नाम पर। अपने देश में नाम रखने की एक प्रथा है। बच्चा जन्म लेता है। माता–पिता या संबंधी पंडित जी के पास जाते हैं। पंडित जी पंचांग देखकर नक्षत्र के अनुसार बच्चे का नाम रखते हैं। तिब्बत में भी ऐसी ही प्रथा है। वहाँ लामा बच्चे का नाम रखते हैं।

तेनजिंग के माता–पिता भी लामा के पास गए। पहले वे अपने बच्चे को और नाम से पुकारते थे। यह नाम था- नामग्याल वांग्डी। वे एक दिन नामग्याल वांग्डी को रोंगबुक मठ ले गए। वहाँ एक महान लामा थे। नामग्याल वांग्डी को उनके दर्शन कराये गए। महान लामा ने पवित्र ग्रंथों को देखा। फिर बताया, "सोलो–खुम्बू में हाल ही में एक धनी व्यक्ति के प्राण गए हैं। यह बच्चा उसी का अवतार है। इसीलिए इसका नाम जरूर बदला जाना चाहिए।

"अब आप ही बताइए नया नाम।" माता–पिता ने अनुरोध किया।

महान लामा ने फिर पवित्र ग्रंथों को देखा।'कुछ देर'विचार किया। फिर बोले, "इस बच्चे का नाम तेनजिंग नोरगे रखा जाए।"

फिर उन्होंने बच्चे का भविष्य बताया। कहा, "ये बच्चा संसार भर में प्रसिद्ध होगा। बड़ा आदमी बनेगा।।" माता–पिता बेहद खुश हुए। उन्हें यह बात एक और लामा ने बताई थी। ये लामा त्सि–चू मठ के थे।

तेनजिंग का अर्थ है- 'धर्म–समर्थक' यानी धर्म को मानने वाला। उसकी रक्षा करने वाला। और नोरगे का अर्थ है- 'धनी', 'भाग्यवान'।

इस तरह तेनजिंग नोरगे का अर्थ हुआ- 'धर्म–समर्थक, जो धनी है, भाग्यवान है।' या 'धनी, भाग्यवान धर्म–समर्थक'।

यह नाम बेहद पवित्र ओर शुभ माना जाता है।

रोंगबुक के उन महान् लामा का नाम भी तेनजिंग था। इस तरह उन्होंने नामग्याल वांग्डी को अपना ही नाम दे दिया था।

अपने नए नाम के बारे में तेनजिंग नोरगे लिखते हैं–– "धनी, भाग्यवान, धर्म–समर्थक' नाम अच्छा था। इसलिए मेरे माता–पिता ने मेरा नाम बदल दिया। उन्हें आशा थी, इससे भला ही होगा।"

तेनजिंग लामा बनते–बनते रह गए

तेनजिंग नोरगे का प्यार से लालन–पालन होने लगा। उनके माता–पिता उन्हें लामा बनाना चाहते थे। तेनजिंग थोड़े बड़े हुए तो उन्हें एक मठ में भेजा गया। उनका मुंडन किया गया। उन्हें भिक्षुओं के वस्त्र पहनाये गए। वे अब मठ में ही रहने लगे।

मठ में एक घटना घट गई। उसने तेनजिंग के जीवन की धारा ही बदल दी। हुआ यह कि एक दिन एक लामा तेनजिंग पर नाराज हो गए। क्रोध में उन्होंने एक लकड़ी की पट्टी उठाई। उसे तेनजिंग के मुंडे सिर पर मारा। तेनजिंग दर्द से बिलबिला उठे। वे सीधे घर की ओर भागे।

उन्होंने माता–पिता को सारी बात बताई। कहा, "अब मैं मठ में कभी नहीं जाऊँगा।"

उनके माता–पिता दयालु थे। वे अपने बच्चों को बेहद प्यार करते थे। उन्होने बेटे की बात मान ली।

तेनजिंग नोरगे ने लिखा है-

"आज मैं अक्सर सोचता हुँ, मेरे माता–पिता मेरी बात न मानते तो? मुझे दोबारा मठ में भेज देते तो? तब क्या होता? क्या तब मुझे लामा बन जाना चाहिए था? मैं नहीं जानता। कभी–कभी मित्रों में इस घटना का जिक्र करता हूँ। तब वे हँस कर कहते हैं, 'ओह, तो सिर पड़ी चोट ने ही तुम्हें पर्वतों के पीछे पागल बना दिया?"

सोलो–खुम्बू में तब कोई स्कूल नहीं था। आजकल नामचे बाजार में एक स्कूल है। छोटा-सा स्कूल, अब वहाँ के बच्चे पढ़ने–लिखने लगे हैं। पर तब? तब वहाँ कोई शाला नहीं थी। मठ में भी शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था। केवल लामा ही एक भाषा सीखते थे। यह उत्तरी बौद्ध धर्म की शास्त्रीय तिब्बती भाषा थी। वह भी केवल मौखिक रूप में पढ़ाई जाती थी।

बौद्ध मठ से भागकर तेनजिंग ने एक अवसर गंवा दिया। यह अवसर शिक्षा पाने का था। अब घर में वे अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेला करते। घर के काम किया करते। वे अपने एक बड़े भाई की पीठ पर सवारी किया करते। उनके घर में मवेशियों का झुंड था। उन्हें सरदियों में घर की निचली मंजिल में बांध दिया जाता। जब मवेशी ठंड में बाहर निकाले जाते, तब उनसे अजीब–सी गंध आती थी। सरदियों में परिवार के लोग ऊपरी मंजिल में ठंसे पड़े रहते। जरा–सी भी जगह नहीं बचती। तब बड़ा शोर मचता था। रसोई का धुआं उठा करता था। चारों ओर एक गंध समायी रहती। पर वे सब प्रसन्न रहते, संतुष्ट होते। कारण? उन्हें जीवन का दूसरा ढंग मालूम नहीं था।

वे खाते–पीते, खेलते, या घर का काम करते। कुछ शेरपा बेहद कठोर होते थे। बच्चों को मारते–पीटते, डांटते–फटकारते रहते। तेनजिंग बताते हैं, उनके पिता कठोर नहीं थे। वे उन्हें बहुत चाहते थे। तेनजिंग भी पिता को प्यार करते थे।

उनका आदर करते थे। वे अपने पिता की हर बात मानते। उनका काम करने के लिए हमेशा तत्पर रहते।

तेनजिंग की एक बड़ी बहन थी। उनका नाम था- लहमू कीपा। वह भी अपने छोटे भाई को बेहद चाहती थी। वह याक का दूध दुहती तो तेनजिंग उस के पास बैठ जाते। लहमू कीपा उन्हें पीने के लिए याक का गरम–गरम, ताज़ा दूध दे दिया करती। तेनजिंग कहते थे, ''लहमू कीपा मेरे लिए दूसरी माँ के समान थी।'' बाद में लहमू कीपा भिक्षुणी बन गईं।

थ्यांग बोचे का बौद्ध मठ प्रसिद्ध है। इसी मठ में वे 'अबे–ला' बनीं। अबे–ला यानी बौद्ध भिक्षुणी। वे सात वर्षों तक वहाँ रहीं। उनके लिए तेनजिंग घर से भोजन ले जाया करते थे। बचपन में तेनजिंग की नजर एवरेस्ट पर सदा पड़ती थी। बचपन में उन्होंने एवरेस्ट का नाम तक नहीं सुना था। उत्तर दिशा में अनेक पर्वत शिखर थे। उन्हीं के मध्य एक शिखर आकाश में ऊँचा उठा हुआ था। उसे उन्होंने कई बार देखा था। पर तब उसका नाम एवरेस्ट नहीं था। वह चोमो–लुंगमा था। चोमो–लुंगमा यानी 'विश्वजननी देवी।' आम तौर पर इस शब्द का यही अर्थ था। पर तब वे इस नाम का अर्थ भी नहीं जानते थे। उनके लिए उसका एक ही अर्थ था। उनके लिए वह ऐसा पर्वत था, जिस पर से कोई पक्षी तक नहीं उड़ सकता था। शेरपा माँएं अपने बच्चों को यही अर्थ बतलाती थीं। तेनजिंग की माँ ने भी उन्हें यही नाम बतलाया था।

बचपनः छोटी दुनिया-बड़े सपने

अपने बचपन के बारे में तेनजिंग बताते हैं-

दूसरे बच्चों की तरह मेरी दुनिया भी बहुत छोटी थी। उस दुनिया में पिता थे, माँ थी, भाई–बहन थे, घर था, गांव था। खेत,

चरागाह और याक थे। उत्तर में महान पर्वत थे। पूर्व तथा पश्चिम में भी ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे। तीन दिशाओं में ऊँचे–ऊँचे पर्वत। चौथी दिशा दक्षिण थी। इस दिशा में दूधकोसी थी, जो जंगलों में गायब हो जाती थी। उसके पार क्या था, मैं नहीं जानता।

"जैसे–जैसे मैं बड़ा होता गया, बाहरी दुनिया के बारे में थोड़ा–बहुत ज्ञान होने लगा। सबसे पहले मैंने तिब्बत के बारे में जाना। फिर उसके पुण्य तीर्थ ल्हासा नगर के बारे में पता चला। ल्हासा के बारे में सभी लोग बातें करते। मेरे माता–पिता और लामा कई बार ल्हासा के बारे में चर्चा किया करते थे। मेरे माता–पिता धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वे ल्हासा की तीर्थयात्रा करना चाहते थे। पर यह यात्रा बेहद लम्बी थी, खर्चीली भी थी। इसलिए वे कभी वहाँ नहीं जा पाए।"

बचपन में तेनजिंग स्वाभाव से शर्मीले थे। वे सबसे अलग-थलग रहा करते थे। और बच्चे एक दूसरे का पीछा करते हुए खेला करते थे। पर वे चुपचाप अकेले बैठे रहते। सुदूर स्थानों की, बड़ी–बड़ी यात्राओं की कल्पना किया करते। इसी में खोये रहते। कभी ऐसा दिखलाते, मानो ल्हासा के किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति को पत्र लिख रहे हैं। एक दिन वह व्यक्ति आकर उन्हें ल्हासा ले जाएगा। कभी–कभी वे सोचते कि वे सेनापति हैं। एक सेना का नेतृत्व कर रहे हैं। कभी–कभी वे यात्रा करने के लिए पिता से घोड़े की मांग करते। तब पिता हँस पड़ते। तेनजिंग यात्रा करना चाहते थे। उनका मन करता था, घूमें, कहीं जाएं, कुछ देखें, कुछ पाएं।

तेनजिंग ल्हासा जाने के सपने देखा करते थे। तब वे किशोर थे। धीरे–धीरे उन्हें अन्य स्थानों के बारे में पता लगा। उन्होंने काठमांडू के बारे में सुना। उन्हें दार्जीलिंग का नाम मालूम पड़ा। अब वे इन स्थानों के बारे में भी सोचने लगे।

उन दिनों शेरपा काम की तलाश में सोलो–खुम्बू से निकल जाते थे। वे पर्वतों–जंगलों को पार कर काठमांडू जाते। कुछ साहसी शेरपा दार्जिलिंग तक पहुँच जाते। वहाँ वे चाय बागानों में काम करते। या दार्जिलिंग में रिक्शा चलाते, या कुली का काम करते। फिर वे अपने परिवार से मिलने सोलो–खुम्बु भी आते। वे गांव वालों को बाहरी दुनिया के बारे में बताते।

पर्वतों के लिए अभियान: शेरपाओं के लिए नया काम

पहले शेरपा चाय बागानों में काम करते थे। दार्जिलिंग में रिक्शा चलाते या बोझा उठाते थे। शीघ्र ही उन्हें एक नया काम मिल गया। वह काम था, पर्वतों पर जाने का।

डॉ. केल्लास नामक एक साहसी पर्वतारोही थे। वे हिमालय में खोज करना चाहते थे। उन्होंने अनुभव किया, शेरपा इस काम में उनकी मदद कर सकते हैं। उन्होंने शेरपाओं को एक नया काम दिया। पर्वतों में मार्ग दर्शन करने का, बोझा उठाने का।

शेरपा तो हिमालय के बेटे थे। उनके लिए यह काम कठिन नहीं था। डॉ. केल्लास की उन्होंने अच्छी सहायता की। उनके काम की प्रशंसा भी हुई। अब तो जो पर्वतारोही हिमालय में जाता, शेरपाओ को जरूर साथ लेता। इनमें से एक पर्वतारोही थे- जनरल ब्रूस। वे भारतीय सेना में थे। शेरपाओं ने उनकी भी खूब मदद की।

शीघ्र ही दार्जिलिंग के शेरपा प्रसिद्ध हो गये। वे पर्वतारोहियों का मार्गदर्शन करते। उनका सामान उठाते।

सन् 1921, 1922 और सन् 1924 में तीन प्रसिद्ध अभियान हुए। इन अभियानों में मंजिल थी- एवरेस्ट। संसार का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर। इन अभियानों में दार्जिलिंग के कई शेरपा शामिल हुए। सोलो–खुम्बू से भी कई शेरपा गये।

शेरपाओं ने विदेशी पर्वतारोहियों को एक नया नाम भी दिया। यह था- चिलिंनान्गा। ये पर्वतारोही बड़े-बड़े जूते पहनते थे, उनके कपड़े भी खास तरह के होते थे। शेरपाओं ने अपने

जीवन में ऐसे जूते, ऐसे कपड़े कभी नहीं देखे थे।

तेनजिंग ने भी विदेशी पर्वतारोही देखे। उनके जूते, उनके कपड़े देखकर उनका मन ललच आया। एक जोड़ी जूतों के लिए उन्होंने पैसे भी दिये। पर वे बहुत बड़े थे। भारी भी बहुत थे। उनको पहन कर वे चल ही नहीं सकते थे। उन दिनों बस एक नाम की ही धूम थी- एवरेस्ट। बस एवरेस्ट। वे सब हमेशा एवरेस्ट की बात किया करते। एक दिन तेनजिंग ने शेरपाओं से पूछा, 'यह एवरेस्ट क्या है?'

'वही चोमो–लुंगमा।' उन्होंने उत्तर दिया। फिर आगे कहा, 'हम चोमो–लुंगमा के दूसरी ओर हैं। चिलिंनान्गा (विदेशी पर्वतारोही) कहते हैं कि वह संसार का सबसे ऊँचा पर्वत है।'

चोमो–लुंगमा अर्थात एवरेस्ट।

इसकी भी अपनी एक कहानी है।

प्रकृति की विचित्र लीलाः सागर की जगह पर्वत

हिमालय... किन्नरों और गंधर्वों का प्रदेश।

कालिदास एक महान कवि थे। उन्होंने हिमालय को 'नगाधिराज' कहा है। 'नगाधिराज' अर्थात पर्वतों का राजा।

बड़े अचरज की बात है।

आज जहाँ हिमालय है, वहाँ पहले कभी सागर था। उसका नाम था- टेथिस सागर।

हिमालय का जन्म कब हुआ था?

अनुमान है- आज से पाँच–छह करोड़ वर्ष पूर्व हिमालय की रचना हुई थी।

भूविज्ञानी बताते हैं-

प्राचीन काल में धरती दो खंडों में बंटी थी। उत्तरी भूखंड, दक्षिणी भूखंड थे। उत्तरी भूखंड से ये क्षेत्र बने- उत्तरी महाद्वीप, यूरेशिया। और दक्षिण भूखण्ड से बने- गोंडवाना, दक्षिणी भारत, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया। इन दोनों भूखण्डों के बीच ही टेथिस सागर था। भूमध्यसागर इसी का अवशेष है। प्रकृति की लीला विचित्र है। इसी के कारण, जहाँ सागर था, वहाँ पर्वत बन गया।

हिमालय पर्वतमाला ढाई हजार किलोमीटर लम्बी है। उसका क्षेत्रफल पाँच लाख वर्ग किलोमीटर है।

प्राचीन काल में इस पर्वतमाला के कई नाम थे। जैसे इमस, हिमस या हीमोड। सिकंदर के साथ आये यूनानियों ने इसे 'भारतीय काकेशस' नाम से पुकारा। हिमालय को कई भागों में बांटा गया। ये हैं- वृहद हिमालय, लघु हिमालय, और बाह्य हिमालय।

भारत के लिए हिमालय का बड़ा महत्व है। उत्तर भारत के निर्माण में, उसका बड़ा हाथ है। उसके कारण जलवायु पर भी असर पड़ा है।

हिमालय न होता तो?

, तो सिंध और गंगा का उपजाऊ मैदान विशाल रेगिस्तान होता। हिमालय के कारण ही उत्तर भारत में वर्षा होती है। गरमी के दिनों में दक्षिण–पश्चिमी मानसूनी हवाएं आती हैं। हिमालय उन्हें आगे नहीं बढ़ने देता। रोक लेता है। फलस्वरूप वर्षा होती है। वर्षा का पानी नदी बन कर निकलता है। ये नदियाँ अपने साथ उपजाऊ मिट्टी भी लाती हैं।

हिमालय एक और काम करता है। शीतकाल में उत्तरी ध्रुव से ठंडी हवाएं चलती हैं। उनके कारण मध्य एशिया का अधिकांश भाग जम जाता है। हिमालय इन ठंडी हवाओं को उधर ही रोक लेता है।

हिमालय में अनेक ऊँचे शिखर हैं। एवरेस्ट भी इनमें से एक है। संसार का सर्वोच्च पर्वत शिखर। इसकी वर्तमान ऊँचाई 29,028 फुट है, यानी 8,848 मीटर।

इस शिखर को नेपाल में 'सरगमाथा' कहते हैं।

इस शिखर का नाम एवरेस्ट क्यों पड़ा?

सन् 1841 की बात है।

तब भारत के सर्वेयर जनरल थे सर जार्ज एवरेस्ट। उन्होंने ही सबसे पहले इस शिखर का सर्वेक्षण किया था। इसी लिए इस शिखर का नामकरण उनके नाम पर किया गया।

एवरेस्ट सन् 1953 तक अविजित रहा। सबसे पहले सन् 1922 में एवरेस्ट पर चढ़ाई की गयी। इसके बाद सन् 1924, 1933, 1935, 1936, 1937, 1938, 1951 और 1952 में प्रयास किए गए। अंत में सन् 1953 में एवरेस्ट पर विजय पायी गई।

क्यों चढ़ते हो शिखर पर?

कैप्टेन मेलोरी!

एक विश्व प्रसिद्ध पर्वतारोही। उन्होंने अपने एक साथी के साथ एवरेस्ट पर चढ़ने की कोशिश की थी। साथी का नाम था- इरविन। उनके साथ कोई शेरपा नहीं था। उनके पास विशेष उपकरण भी नहीं थे। पर उनके पास एक बहुत बड़ी चीज़ थी। यह था- मन में उत्साह, दृढ़ इच्छा शक्ति, कभी हार न मानने का संकल्प।

क्या मेलोरी और इरविन शिखर तक, एवरेस्ट तक पहुँच पाए थे? यह रहस्य ही बना हुआ है। क्यों? इसलिए कि मेलोरी और इरविन कभी लौटकर नहीं आ पाए। उनके शवों तक का पता नहीं चला।

इन्हीं मेलोरी से किसी ने पूछा था-

''आप क्यों चढ़ते हैं शिखर पर?''

''क्योंकि वह सामने है?'' मेलोरी का उत्तर था।

क्या अर्थ है, इस उत्तर का? यही कि शिखर एक चुनौती देता है। और, साहसी व्यक्ति चुनौती से पीछे नहीं हटते। वे आगे बढ़कर उसे स्वीकार करते हैं। मेलोरी और इरविन ने भी यही चुनौती स्वीकार की थी।

आज एवरेस्ट पर मनुष्य पहुँच चुका है। तेनजिंग और हिलेरी के बाद कई लोग एवरेस्ट तक पहुँचे। इनमें अमरीका, जापान, और भी अन्य देशों के लोग है। अनेक भारतीय भी एवरेस्ट तक पहुंचे हैं। इनमें से एक हैं- मेजर हरिपाल सिंह अहलूवालिया। उनकी एक पुस्तक है- 'आस्मां और भी हैं।'

इसमें उनकी एवरेस्ट यात्रा के संस्मरण हैं। इस पुस्तक में एक जगह उन्होंने लिखा है-

"मैं समझता हूँ कि चोटी पर चढ़ पाना सफलता का एक अंग मात्र है। सफलता से भी अधिक पूर्णता या संतोष की वह भावना है, जो मानव को इसलिए प्रिय है कि वह अपने वातावरण पर विजय पा सका है और उससे ऊपर उठ सका है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मानव सदा साहसिक कामों की खोज में रहता है। और जोखिम से जूझना एवं अज्ञात को जानना उसकी प्रकृति का अंग है। चोटी पर चढ़ना शारीरिक अनुभव ही नहीं, बल्कि उससे भावनाओं को भी संतोष मिलता है। मैं तो यहाँ तक कहूंगा कि यह एक आत्मिक अनुभव है।"

सचमुच, जोखिम से जूझना आदमी की आदत है। अज्ञात को जानना उसका स्वभाव है। इसलिए तो आदमी इतनी तरक्की कर सका है। कहाँ आदिम मानव! कहाँ अंतरिक्ष तक पहुँचने वाला मानव! मनुष्य में जोखिम से जूझने की भावना नहीं होती, अज्ञात को जानने की जिज्ञासा नहीं होती, तो क्या मनुष्य इतनी प्रगति कर सकता था? शायद नहीं। तब शायद वह आज भी गुफाओं में ही रहता।

लेकिन मनुष्य का स्वभाव ऐसा नहीं है। वह सदा जोखिम से जूझता है। चुनौती स्वीकार करता है। अज्ञात के रहस्य खोलता है। उसके मन में एक जिज्ञासा होती है। इसी जिज्ञासा के कारण वह प्रकृति के नियम जान पाया है। सूर्य, चन्द्रमा, ग्रहों की गति जान पाया है। अंतरिक्ष में चन्द्रमा के धरातल तक पर उतर सका है।

इसमें मनुष्य ने खतरे भी बहुत उठाये हैं। जाने कितने लोगों के प्राण गए हैं। पर क्या मनुष्य पीछे हटा है? नहीं। पीछे हटना तो उसका स्वभाव ही नहीं है। एवरेस्ट अभियान में भी कई लोगों के प्राण गए हैं। मेलोरी और इरविन को भी अपने प्राण गंवाने पड़े।

पर क्या इससे लोग हिम्मत हार गए? नहीं। उन्हें लगा, अब तो एवरेस्ट पर चढ़ना और जरूरी है।

सन् 1922 में एक पर्वतारोही दल एवरेस्ट गया था। राह में बर्फ–स्खलन हो गया। बर्फ–स्खलन का अर्थ है, बर्फ का धंसना। उसमें सात शेरपाओं की मृत्यु हो गई। सोलो–खुम्बू दुःख के सागर में डूब गया। चारों ओर शोक छा गया। पर दो वर्ष बाद फिर एक पर्वतारोही दल आया। उनके साथ भी शेरपा गए। उस वर्ष तो और ज्यादा शेरपा दल के साथ थे। इसी वर्ष, सन् 1924 में, मेलोरी और इरविन लापता हुए। वे हिमालय में जैसे कहीं खो गए।

शेरपा लौटे तो उन्होंने गाँव वालों को उनके बारे में बताया। तेनजिंग नोरगे ने भी उनका नाम सुना। वे रोमांचित हो उठे। शुरू–शुरू में पर्वतारोहण अभियानों में तेनजिंग के परिवार से कोई नहीं गया। पर ऐसे अभियानों में जाने के लिए वे कुछ भी करने को तैयार थे। कुछ भी देने को तैयार थे। पर तब वे बहुत छोटे थे। इस तरह बचपन से तेनजिंग के मन में एक चाह जगी। पर्वतों पर चढ़ाई करने की। एवरेस्ट तक पहुँचने की। पर तब वे छोटे थे। पर्वतों पर जाने का प्रश्न ही नहीं था। कौन ले जाता छोटे बच्चे को अपने साथ?

सो, तेनजिंग घर के काम–काज में हाथ बंटाया करते। घर में कोई न कोई काम निकला ही करता था। उनके खेतों में आलू के अलावा जौ भी उगाया जाता था। भेड़ों और याकों की देखभाल का भी काम था। भेड़ें और याक बहुत उपयोगी पशु थे। उनसे उन्हें दूध मिलता, मक्खन मिलता, वस्त्रों के लिए ऊन भी मिलता।

नेपाल में पशुवध को अच्छा नहीं समझा जाता। बौद्ध लोग भी पशु हत्या नहीं करते। इसलिए याक कभी नहीं मारे जाते। पर वहाँ याक का खून निकाला जाता था। वह बहुत ताकतवर

समझा जाता था। खून निकालने से याक को भी लाभ हो जाता। कैसे? दिलचस्प बात है। पूरी गरमी याक भरपेट भोजन करते थे। इससे उनमें खून बढ़ जाया करता था। इसलिए वे ताकतवर भी हो जाते। ताकतवर हो जाते तो आपस में लड़ते। यहाँ–वहाँ अकारण दौड़ा–भागा करते। खून निकालने से वे शांत हो जाते।

तेनजिंग बताते थे कि शुरू–शुरू में उनका परिवार बहुत गरीब था। पर उन्हें भाग्यशाली समझा जाता था। परिवार के लोगों का ख्याल था, उनके जन्म के बाद उनके दिन फिर गये हैं। कारण, जिस वर्ष वे पैदा हुए, उसी वर्ष सौ नन्हें याक भी पैदा हुए। इसके बाद तो उनके घर कभी कभी तीन–तीन सौ, चार–चार सौ तक याक हो जाया करते!

इस तरह तेनजिंग का बचपन याकों के साथ भी बीता। उन्हें याकों के साथ पहाड़ों पर जाना अच्छा लगता था। वे याकों के साथ अठारह हजार फुट की ऊँचाई तक चले जाते। इस ऊँचाई तक याकों के लिए घास मिल जाती। पर ये स्थान खतरनाक भी माने जाते थे। लोगो का विश्वास था, वहाँ हिम मानव रहते हैं। वे उन्हें येती कहते थे। तेनजिंग ने भी येतियों के बारे में सुना था। लामा अक्सर उनकी कहानियाँ सुनाया करते थे। वे अन्य खतरनाक जीवों की भी कहानियाँ सुनाया करते। ये जीव दैत्यों से भी खतरनाक थे। येती से भी भयानक थे। तेनजिंग भी इन खतरनाक जीवों की कहानियाँ सुनते। पर वे स्वयं एक दिन इन जीवों को देखना चाहते थे। उन्हें मालूम था कि कई लोग चोमो–लुंगमा पर चढ़े हैं। इसमें उनके इलाके के भी लोग थे। उनमें कुछ मारे गए थे। पर कई जीवित भी लौट आए थे।

तेनजिंग बड़े हुए तो उन्हें सोलो–खुम्बू छोटा लगने लगा। वे सोचते, संसार कितना बड़ा है और सोलो–खुम्बू कितना छोटा। उनके मन में एक विचार आता- सोलो–खुम्बू से बाहर निकलना चाहिए। बाहर की दुनिया देखनी चाहिए! और एक

दिन वे काठमांडू के लिए चल पड़े। तब उनकी अवस्था थी-केवल तेरह वर्ष!

संघर्षों की सीप : सफलता के मोती

अयोध्याप्रसाद सिंह 'हरिऔघ' हिन्दी के एक सुप्रसिद्ध कवि। उनकी एक कविता है। शीर्षक है– 'एक बूंद'। इसका भावार्थ कुछ ऐसा है :

एक बूंद थी। वह बादलों का घर छोड़कर आकाश से निकल पड़ी। निकल तो पड़ी, पर सोचने लगी, मेरा क्या होगा?, कहाँ जाऊँगी, कहाँ गिरूंगी। खेत पर?, तपते रेगिस्तान में। बूंद घबरा गई। लेकिन एक घटना घटी। वह बूंद एक खुली सीप की गोद में जा गिरी। और फिर एक दिन मोती बन गई।

क्या अर्थ है, इस कविता का? यही कि घर छोड़ने में घबराना नहीं चाहिए। दुनिया का सामना करना चाहिए। संघर्षों की सीप हमें मोती बना देती है। सफलता के मोती। तेनजिंग नोरगे ने भी संघर्ष किया था। वे तेरह साल के थे। माता–पिता, बहन के लाड़ले। वे भी उन्हें बहुत चाहते थे। उन्हें कोई दु:ख नहीं पहुँचाना चाहते थे। पर वे बाहर की दुनिया भी देखना चाहते थे।

तेनजिंग किशोर थे। जानते थे, माता–पिता घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं देंगे। सो, एक दिन वे चुपचाप घर से निकल पड़े। उन्हें पैदल ही यात्रा करनी थी। कोई बस या रेलगाड़ी तो थी नहीं। उनका कोई साथी भी नहीं था। पर जहाँ चाह, वहाँ राह। पहाड़ी रास्ता, चक्करदार, खतरनाक, कहीं नदी, कहीं नाले। पर तेनजिंग चल पड़े। काफी दूर तक वे अकेले चले। फिर उन्हें कुछ यात्री मिल गए। दो सप्ताह बाद वे काठमांडू में थे।

काठमांडू : नेपाल की राजधानी। सड़कों पर भीड़। तरह–तरह की पोशाकें पहने लोग। तेनजिंग अचरज से भर गए। उन्होंने इतनी भीड़, ऐसे लोग, पहले कभी नहीं देखे थे। वहाँ उनका कोई परिचित नहीं था। कहाँ ठहरते। लेकिन वे घबराये नहीं। उन्होंने एक बौद्ध मठ का पता लगाया। वहाँ अजनबी लोगों की सहायता की जाती थी। उनका ख्याल रखा जाता था। वे इसी बौद्ध मठ में ठहर गए।

दो सप्ताहों तक वे काठमांडू की सड़कों पर घूमते रहे। उन्होंने बाजार देखा, बड़े–बड़े मंदिर देखे, मठ देखे। पर वे अपने माता–पिता को भूले नहीं। हर दम सोचते रहते, कैसे होंगे वे? उन्हें घर की याद सताने लगी। एक दिन उनकी भेंट कुछ लोगों से हुई। वे सोलो–खम्बू के थे। घर वापस लौट रहे थे। तेनजिंग भी उनके साथ हो लिये। कुछ दिन बाद वे घर पहुँचे। उन्हें देखकर माता–पिता बेहद खुश हुए। उन्होंने उन्हें गले से लगा लिया। फिर डांटा–फटकारा भी – क्यों गए थे घर छोड़कर?

इसके बाद पाँच वर्ष तक तेनजिंग घर पर ही रहे। पर एक बात वे जानते थे। वे कभी सोलो–खुम्बू में नहीं रह सकते। जीवन में वे किसान नहीं बनेंगे। पशुओं को चराने का काम नहीं करेंगे। दिन सप्ताह में बदले। सप्ताह महीनों में। महीने वर्षों में। तेनजिंग भी बड़े होते गए।

अब वे अठारह वर्ष के थे। बड़े हो गए थे। बाहर की दुनिया में जा सकते थे। खतरों का सामना करने की ताकत पा गए थे। सो एक दिन तेनजिंग फिर घर से निकल पड़े।

फिर काठमांडू की ओर ? नहीं।

इस बार उनकी मंजिल थी, दार्जिलिंग।

माँ का स्नेह : एवरेस्ट का आकर्षण

दार्जिलिंग जहाँ चाय बागान थे, जहाँ शेरपा थे। कुली का काम करने वाले शेरपा। पर्वतों पर जाने वाले शेरपा।

दार्जिलिंग जाने का एक और कारण था। शायद प्रमुख कारण। उन्हें पता चला था कि पर्वतों पर एक अभियान दल जाने वाला है। तेनजिंग इसी अभियान दल में शामिल होना चाहते थे। पर दार्जिलिंग जाने में कई दिक्कतें थीं। सबसे बड़ी दिक्कत थी – माता-पिता की अनुमति की। तेनजिंग जानते थे। माता-पिता कभी नहीं जाने देंगे। फिर क्या किया जाए? तेनजिंग उधेड़बुन में रहे। अंत में उन्होंने एक निर्णय कर लिया। वे माता-पिता से बिना पूछे निकल पड़ेंगे।

एक बार फिर वे अपने माता-पिता को बिना बताए निकल पड़े। इस कारण उन्हें दुःख भी था। माता-पिता उन्हें बेहद चाहते थे। वे भी उन्हें बेहद चाहते थे। माता-पिता सीधे-सादे थे। पवित्र जिंदगी बिताने वाले। खास कर उनकी माँ। वे बहुत दयालु थीं। उन्होंने जिंदगी भर सादगी की जिंदगी बिताई। उन्होंने कभी अच्छे कपड़े नहीं पहने। न कभी अच्छा भोजन किया। जब भी मौका मिलता, वे दोनों चीजें मठों के लामाओं को दे देतीं। भिक्षुणियों को भेंट कर देतीं। तेनजिंग अपनी माँ का बेहद आदर करते थे। वे कहते थे, "मेरी सफलता में मेरी माँ के विश्वास, उसकी भक्ति, उसके आशीर्वादों, उसकी प्रार्थनाओं का बहुत बड़ा योग रहा है।"

ऐसी माँ को छोड़ना कठिन था।

एक ओर माँ का स्नेह, दूसरी ओर एवरेस्ट का आकर्षण।

पर एवरेस्ट की जीत हुई। घर से निकलना इतना आसान नहीं था। उसके लिए तैयारी करनी थी, योजना बनानी थी। वह भी चुपचाप। गुप्त रीति से। गाँव छोड़ने वाले अकेले तेनजिंग नहीं थे। ऐसे बारह लोग थे। इनमें लड़के भी थे, लड़कियाँ भी थीं। ये सब एक महीने तक गुप्त बैठकें करते रहे। रास्ते के लिए भोजन तथा दूसरी जरूरत की चीज़ें जुटाते रहे। तेनजिंग अपने साथ केवल कंबल ला पाए। पैसे तो थे ही नहीं। औरों का भी उनके जैसा ही हाल था। फिर भी उनके मन में उत्साह था। एक दिन ये बारह लोग गाँव से निकल पड़े।

तेनजिंग का एक प्रसिद्ध शेरपा मित्र था। नाम था दावा थोंड़प। वह भी दार्जिलिंग नहीं गया था। पर उसके बारे में उसे काफी जानकारी थी। उसीने तेनजिंग को बताया था कि एवरेस्ट पर अभियान दल जाने वाला है। उसमें हम सब को काम जरूर मिल जाएगा, सो, सब के मन में आशा थी।

कहते हैं, चार बरतन पास रखे होंगे तो खड़खड़ाएंगे ही। इसी तरह चार लोग एकत्र होंगे तो वाद-विवाद होगा ही। तेनजिंग के दल के साथ भी यही हुआ। बारह लोग, बारह दिमाग। हर एक की अपनी ढफली, अपना राग। फिर कठिन रास्ता। कहीं चढ़ाई, कहीं ढलान, कहीं जंगलों से भरी घाटियाँ, कहीं हरहराती — दौड़ती नदियाँ।

कहते हैं, संकट में समझदार लोग संगठित हो जाते हैं। तेनजिंग के दल के लोग भी संगठित रहे। पर केवल एक सीमा तक। जहाँ तक खतरे रहे, रास्ता दुर्गम रहा, वे सब साथ रहे। भारत-नेपाल की सीमा पर पहुँचते ही गड़बड़ हो गई। किसी बात पर मन् मुटाव हो गया। दल के लोग तेनजिंग को अकेला छोड़ कर चल पड़े।

तेनजिंग परेशान हो उठे। नई जगह, पास में एक पैसा नहीं। क्या करें, कहाँ जाएँ? पता चला, पासमें एक कस्बा है।

नाम — सिमाना। तेनजिंग उसी की ओर चल पड़े। वहाँ एक धनी व्यक्ति रहता था। नाम था रिंगा नामा। भाग्य की बात। तेनजिंग की उसी से भेंट हो गई। तेनजिंग को अपनी भाषा ही आती थी। वे नेपाली तक नहीं जानते थे। पर रिंगा नामा को शेरपा बोली की थोड़ी बहुत जानकारी थी। उन्हें असहाय जानकर वह घर ले गया। उसके परिवार वाले भी भले लोग थे। दयालु प्रवृत्ति के। उन्होंने तेनजिंग के ठहरने का प्रबन्ध किया। उन्हें भोजन कराया। पहनने के लिए नेपाली कपड़े दिए। बदले में तेनजिंग उनका काम कर दिया करते। घर के कामकाज में हाथ बंटाते। जंगल से जलाऊ लकड़ी ले आते। जंगल में वे अकेले होते। उन्हें अपने माता-पिता की याद आती। अपनी हालत पर तरस आता। कभी-कभी वे पेड़ के नीचे बैठ कर रोने भी लगते।

उन्हीं दिनों उन्होंने एक बात जानी। सपनों में और वास्तविकता में बड़ा अन्तर होता है। वे एक नहीं होते। सिमाना की जिंदगी से तेनजिंग ऊब गए। उन्होंने एक दिन रिंगा नामा से कहा, ''मैं दार्जिलिंग जाना चाहता हूँ।''

रिंगा नामा उदार दिल का था। बोला, ''ठीक है। मैं व्यापार के सिलसिले में वहाँ जा रहा हूँ। तुमको भी ले चलूँगा।''

और, एक दिन तेनजिंग दार्जिलिंग के लिए चल पड़े। पर यह सफर कठिनाइयों से भरा नहीं था। तेनजिंग एक कार में यात्रा कर रहे थे। तेनजिंग ने जीवन में पहले कभी कार नहीं देखी थी। उस पर बैठना तो दूर रहा। कार को देखकर उन्हें बेहद अचरज हुआ। और बैठकर तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पहाड़ी सड़क पर कार दौड़ने लगी। तेनजिंगका मन तरह-तरह की कल्पनाएं करने लगा। नये नये सपने देखने लगा। आखिर वे दार्जिलिंग पहुँच ही गए।

दार्जिलिंग: नए अवसर, नए आकर्षण

दार्जिलिंग यही तो मंजिल थी उनकी। यहाँ के लिए तो सोलो-खुम्बू से रवाना हुए थे। तेनजिंग को लगा, दार्जिलिंग काठमांडू जैसा बड़ा नहीं है। पर कई बातों में वह काठमांडू से बड़ा था। वहाँ तेनजिंग ने जिंदगी में पहली बार नई-नई चीज़ें देखीं – रेलगाड़ी, इंजिन और बहुत सारे चिलिंगान्गा यानी विदेशी।

रिंगा नामा तेनजिंग को बहुत चाहता था। जानता था कि नए शहर में यह युवक कहाँ रहेगा। वह उन्हें आलूबारी ले गया। आलूबारी दार्जिलिंग के पास एक गाँव है। वहाँ आलू की खेती होती है। आलूबारी में रिंगा नामा का चेचेरा भाई रहता था। उसका नाम पौरी था। रिंगा नामा ने उसी के घर तेनजिंग के ठहरने का इंतजाम कर दिया। पौरी उन्हें देखकर खुश हुआ। उसके पास पन्द्रह गाएं थीं। उसने तेनजिंग से कहा, "तुम इन गायों की देखभाल करो। घर के कामकाज में हाथ बटाओ। और आराम से यहाँ रहो।"

तेनजिंग पौरी के घर रहने लगे। वे गायों की देखभाल करते। घर के कामकाज में हाथ बंटाते। धीरे-धीरे उन्होंने नेपाली सीख ली। नेपाली के अलावा वहाँ की एक और बोली थी। उसका नाम था – मालमो। तेनजिंग ने उसे भी सीख लिया। यहीं तेनजिंग की भेंट एक घसियारे से हुई। उसका नाम था – मन बहादुर तमंग। वे मन बहादुर को अपना गुरु मानते थे। वह उनके साथ गायों के लिए घास काटता। उन्हें दुनियादारी की बातें समझाता।

पौरी तेनजिंग को दार्जिलिंग भी भेजा करता था। तब उनका काम था – वहाँ दूध बेचना। दार्जिलिंग जाने के लिए

तेनजिंग बहुत आतुर रहते।

क्यों?

वहाँ से उन्हें हिमालय की पूर्वी श्रेणियाँ दिखाई देतीं। अनेक छोटी-बड़ी चोटियाँ। इनमें एक पर्वत को देखकर उन्हें अच्छा लगता। यह पर्वत था कंचनजंगा। उसकी धूप में चमकती चोटी उन्हें जैसे हिम्मत बंधाती। उन्हें लगता, वे हिमालय से दूर नहीं हैं। हिमालय, जिसे वे बेहद प्यार करते हैं।

दार्जिलिंग में और भी आकर्षण थे। सुंदर-सुंदर निवास-स्थान। चहल-पहल से भरे चायघर, सिनेमाघर, महल, किलेनुमा होटल। दूध बेचने के साथ-साथ वे इन चीजों को भी देखा करते।

लेकिन दार्जिलिंग में इन सब से बड़ा एक और आकर्षण था।

विपरीत परिस्थितियाँ

सन् 1933 का वर्ष था।

एवरेस्ट पर फिर चढ़ाई की जाने वाली थी।

इंग्लैंड से पर्वतारोही आ पहुँचे थे। पूरे शहर में हलचल थी। दार्जिलिंग में एक क्लब था। नाम था प्लांटर्स क्लब। इसमें अभियान दल के नेता बैठा करते। उनका नाम था ह्यू रटलेज। उनसे मिलने कई लोग जाते। 'शेरपा' भी उनसे मिला करते। तेनजिंग सोचते मुझे भी 'साहिब' से मिलना चाहिए।

तब दूध बेचने की बात उनके दिमाग से बिलकुल निकल गई। वे हर समय सोचते रहते, मुझे जाना चाहिए। साहिब से मिलना चाहिए। पहले-पहल प्लांटर्स क्लब जाने में वे डरते थे। उन्होंने दावा थोंडूप से मदद लेनी चाही। दावा थोंडूप उनका दोस्त था। उसे साहिब ने नियुक्त कर लिया था। सो, उन्होंने दावा थोंडूप से बात की। कहा, 'मेरे बारे में साहिब से बात करो न।'

'नहीं, तुम अभी बहुत छोटे हो।' दावा थोंडूप ने कहा। तेनजिंग को अपनी आशाओं पर पानी फिरता नजर आया। उन्होंने एक और कोशिश की। उससे कहा, 'मैं किसी भी वयस्क आदमी की तरह ताकतवर हूँ।' पर दावा थोंडूप अपनी राय पर अड़ा रहा। तब तेनजिंग ने अन्य शेरपाओं से भी कहा, पर वे भी यही कहते रहे – 'तुम अभी छोटे हो। बहुत छोटे...'

इन सब बातों से तेनजिंग थोड़े निराश हुए। पर उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने तय किया, वे खुद बात करेंगे। लेकिन तब परिस्थितियां ही विपरीत थीं। 'साहिब' लोगों ने उन्हें शेरपा

ही नहीं समझा। वे उन्हें नेपाली मान बैठे।

कारण?

तेनजिंग के बाल कटे हुए थे। जब वे सोलो-खुम्बू से आए थे, तो बाल चोटियों में गुंथे रहते थे। लोगों ने उनका मजाक करना शुरू कर दिया। कहने लगे, 'तुम लड़की हो।' तेनजिंग परेशान हो गए। उन्होंने सोचा, बाल छोटे करा लेने चाहिए। 'न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी'। सो उन्होंने बाल कटवा दिए। एक और गड़बड़ी हुई। तेनजिंग के कपड़े भी शेरपाओं जैसे न थे। रिंगा नामा ने उन्हें नेपाली वस्त्र दिए थे और वे उन्हें ही पहना करते थे। इन सब बातों से वे नेपाली समझे जाने लगे। एक बात और थी। तेनजिंग के पास किसी अभियान-दल का प्रमाण—पत्र भी नहीं था।

काम ढूंढ़ने के लिए निकले कई नवयुवकों के साथ ऐसा ही होता है। वे पूछते हैं, 'क्या तुमने पहले कहीं काम किया है?' उत्तर मिलता है, 'नहीं'। 'इस पर वे कहते हमें तो केवल अनुभव वाले लोग चाहिए।' एक अजीब बात है। बिना काम किए उसे करने का मौका मिले, अनुभव कहाँ से मिलेगा!

तेनजिंग के पास कोई अनुभव नहीं था। उन्हें काम नहीं मिला।

एक दिन अभियान दल दार्जिलिंग से रवाना हुआ। तेनजिंग बुझे मन से उसका प्रस्थान देखते रहे। उनका मन खिन्न हो गया। फिर उन्होंने स्वयं को संभाला। काम में मन लगाया। वे पौरी की गायों की देखभाल करते रहे। दूध बेचते रहे। यहीं उनका परिचय एक लड़की से हुआ। तेनजिंग और उसके बीच भाव-ताव को लेकर रोज तकरार हुआ करती। इस लड़की का नाम अंग लहमू था। बाद में तेनजिंग ने उसी से विवाह किया।

दिन बीत रहे थे। तेनजिंग को दार्जिलिंग में रहते हुए एक वर्ष हो चला था।

एक बार सोलो-खुम्बू की ओर

इसी बीच सोलो-खूम्बू से कुछ लोग दार्जिलिंग आए। उन्होंने तेनजिंग को देखा। उन्हें अचरज हुआ। सोलो-खुम्बू में तो खबर थी कि वे नहीं रहे। इन लोगों ने तेनजिंग को उनके माता-पिता के बारे में बताया। कहा कि वे लोग बहुत दु:खी हैं। उन्हें खबर मिली है कि तुम्हारी मृत्यु हो गई है।

तेनजिंग उदास हो गए। माता-पिता और घर की याद से वे बेचैन हो उठे। उन्होंने घर लौटने का, माता-पिता से मिलने का फैसला कर लिया।

तेनजिंग ने पौरी को अपनी इच्छा बताई। वह बोला, ''ठीक है। जाओ। पर अपनी जगह कोई आदमी रख जाओ।''

अब तेनजिंग किसी आदमी की तलाश में शहर में निकले। माता-पिता से मिलना जरूरी था। किसी तरह उन्होंने एक आदमी खोजा। उसे अपनी जगह रखा और तत्काल निकल पड़े। उन्हें भय था कि कहीं उस आदमी का या पौरी का दिमाग बदल न जाए। फिर तो उनका जाना मुश्किल हो जाएगा।

एक बार फिर वही सफर शुरू हुआ। दार्जिलिंग से काठमांडू। वहाँ से सोलो-खुम्बू। वही पहाड़ी रास्ते। वही खतरनाक घाटियाँ। फिर एक दिन तेनजिंग अपने गाँव पहुँच ही गए।

यह क्या ?

तेनजिंग के माता-पिता उन्हें मृत समझ कर पूजा-पाठ कर रहे थे।

उन्होंने बेटे को देखा।

पहले तो आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। फिर वे रोने लगे। इतने दिनों बाद बेटा घर वापस आया था। वह बेटा, जिसे उन्होंने मृत समझ लिया था। वे बहुत देर तक रोते रहे। आखिर उनकी

रुलाई थमी। अब वे खुश थे। बेटा मिल गया था। इस बार उन्होंने बेटे को डांटा-डपटा नहीं। वह अब बड़ा हो गया था।

तेनजिंग ने गाँव के हालचाल पूछे। अपना हाल बताया। उन्हें पता चला, सोलो-खुम्बू में भूचाल आया था। गाँव के कई घर गिरे थे। तेनजिंग के घर का भी एक हिस्सा ढह गया था। सबसे पहले उन्होंने उसे फिर से बनाने में मदद की। फिर घर के कामकाज में हाथ बंटाने लगे। खेती का काम। याकों की देखभाल।

गरमियाँ शुरू हो गईं थीं। यात्रा के लिए अच्छा मौसम था। एक दिन तेनजिंग के पिता ने उससे कहा, ''बेटा, तिब्बत जाकर नमक ले आओ।''

सोलो-खुम्बू में नमक की हमेशा कमी रहती थी। उसे तिब्बत से लाया जाता था।

एक दिन तेनजिग तिब्बत के लिए चल पड़े।

तिब्बत की यात्रा आसान नहीं थी। वही पहाड़ी रास्ता। खतरनाक। उन्होंने नांगदा – ला नामक दर्रा पार किया। तिब्बत में ला का अर्थ दर्रा होता है। वे यात्रा करते हुए एवरेस्ट के दूसरी ओर पहुँचे। वहाँ रोंगबुक नामक एक स्थान है। वहाँ एक प्रसिद्ध बौद्ध मठ है। यह थ्यांगबोचे मठ से भी बहुत बड़ा है। उसमें तब पाँच सौ बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियाँ रहते थे।

रोंगबुक का एक और महत्व था। एवरेस्ट को जाने वाले अभियान दल वहीं अपना शिविर लगाया करते थे।

तेनजिंग तिब्बत पहुँचे। वहाँ से नमक लेकर घर लौटे। दिन इसी तरह बीतने लगे। शीघ्र ही तेनजिंग का मन ऊब गया। सोचने लगे, क्या करें, कहाँ जाएं। इसी बीच एक दिन पिता का आदेश मिला, तिब्बत जाकर फिर नमक लाओ।

तेनजिंग ने सोचा, क्या जिंदगी इसी तरह बीतेगी ? क्या उसे इसी तरह बितानी चाहिए। नहीं, बाहर की दुनिया में फिर जाना

चाहिए। उनकी नजर चोमो-लुंगमा पर पड़ी। चोमो-लुंगमा – विश्व की जननी – देवी। उस पर कोई पक्षी तक नहीं उड़ सकता।

उन्होंने सोचा, मुझे तो चोमो-लुंगमा तक पहुँचना है। और सोलो-खुम्बू में रहकर वहाँ जाना कठिन है। फिर? दार्जिलिंग चलना चाहिए। वहीं अवसर मिलेगा। और एक दिन तेनजिंग दार्जिलिंग के लिए चल पड़े। जाना था तिब्बत, पहुँच गये दार्जिलिंग।

शेरपाओं के बीच : शोक भी, गर्व भी

दार्जिलिंग में दो बस्तियां थीं – एक का नाम था – तूंग-सूंग बस्ती और दूसरी का नाम था भूटिया बस्ती। दार्जिलिंग पहुंचकर तेनजिंग तूंग-सूंग बस्ती में गए।

वहाँ एक अनुभवी शेरपा पर्वतारोही रहा करते थे। उनका नाम था – अंग नश्त्वे। तेनजिंग उन्हीं के घर किरायेदार के रूप में रहने लगे। दावा थोंडूप भी वहीं पास में रहते थे। वे तेनजिंग के मित्र थे। और भी शेरपा रहा करते थे। वे सब पर्वतारोही थे। एवरेस्ट अभियान में शामिल हो चुके थे। अन्य पर्वतों पर चढ़ भी चुके थे।

उन दिनों तूंग-सूंग बस्ती में विचित्र वातावरण था। शोक भी था। गर्व भी था।

शोक क्यों था?

हुआ यह था। एक जरमन अभियान दल नंगापर्वत गया था। यह पर्वत शिखर कश्मीर में है। इस दल में बस्ती के कई शेरपा गए थे। उनमें दावा थोंडूप और अंग त्सेरिंग नाम के शेरपा भी थे। इस अभियान के समय एक दुर्घटना घट गई। भयंकर दुर्घटना। चढ़ाई के समय एक भीषण अंधड़ आया। उसमें

चार जरमन पर्वतारोही मारे गए। छह शेरपाओं के भी प्राण गए। इसीलिए बस्ती में शोक था।

पर गर्व क्यों?

गर्व का भी कारण था। पहली बार शेरपा अपने घर से इतनी दूर गए थे। यह साहस की बात थी।

दावा थोंडूप और अंग त्सेरिंग इस अभियान के संस्मरण सुनाया करते। वे तेनजिंग को एक साहसी शेरपा के बारे में बताते। इस शेरपा का नाम ग्याली था।

ग्याली, दल के नेता के साथ शिखर तक पहुँचा था। दल के नेता का नाम विली मर्कल था। वे दोनों शिखर तक तो पहुँच गए। पर लौटते वक्त विपत्ति आ गई। मर्कल बेहद कमजोर हो गए थे। एक कदम भी नहीं चल सकते थे।

ग्याली ठीक था। वह चाहता तो अकेले वापस लौट सकता था। पर क्या वह वापस लौटा? नहीं। अपने नेता को असहाय छोड़ना उसे ठीक न लगा। उसने भरसक कोशिश की। चाहा, किसी तरह उन्हें सुरक्षित स्थान तक ले जाए। पर मर्कल बेहद थक गए थे। उनमें ताकत नहीं रही थी। और उनके प्राण वहीं छूट गये। ग्याली भी नहीं लौट पाया।

ग्याली की कहानी रोमांचक थी। साहस से भरी, कर्तव्य-निष्ठा की प्रेरक गाथा। तेनजिंग ग्याली के बलिदान की कहानी सुनते। उन्हें गर्व होता कि वे भी शेरपा हैं। वे उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

सोलो-खुम्बू की तरह दार्जिलिंग में भी भूकम्प आया था। कई घर ढह गए थे। उनकी मरम्मत का काम जारी था। दार्जिलिग में सेंट पाल स्कूल है। उसकी भी इमारत ढह गई थी। उसकी भी मरम्मत की जा रही थी। कई शेरपा वहाँ मजदूरी करते। तेनजिंग भी वहाँ मजदूरी करने लगे। तब उन्हें प्रतिदिन बारह आने मिलते। यही मजदूरी थी।

तेनजिंग बताते...

"आज यह मजदूरी बहुत कम प्रतीत होती है। पर उन दिनों वह अच्छी खासी मजदूरी समझी जाती थी। शेरपा जब पहाड़ों पर नहीं जाते तो मजदूरी ही करते। उन दिनों थोड़े से दुकानदार और व्यापारी ही अमीर थे। शेष हम सब शेरपा बेहद गरीब थे। हम सब लकड़ी के खोखों में रहते। उनकी छत टीन की होती। अक्सर सारा परिवार एक ही खोखे में रहता। चावल और आलू -- यही हमारा मुख्य भोजन था। हम सब काफी काम करते थे। फिर भी हमारी आय बहुत कम थी। पर ईश्वर ने हमें एक वरदान भी दिया था। हमारी जरूरतें बहुत थोड़ी थीं। हम कम में ही गुजारा कर लेते थे। हमें कोई शिकायत नहीं थी। हम संतोषी जीव थे।"

तेनजिंग काफी बड़े हो गए थे। दोस्तों ने सलाह दी -- 'शादी कर लो।'

तेनजिंग भी अकेले रहते तंग आ गए थे। उन्होंने हामी भर दी। संयोग की बात। बस्ती में सोलो-खुम्बू की एक लड़की रहती थी। उसका नाम था -- दावा फुटी। 'फुटी' का अर्थ है -- संतानों को जन्म देने वाली पत्नी।

एक दिन दावा फुटी से तेनजिंग का विवाह हो गया। उन्होंने उसे सोलो-खुम्बू में भी देखा था। पर दार्जिलिंग में ही उसे जान पाए। अब तेनजिंग परिवार वाले हो गए थे। उन्होंने तूंग-सूंग बस्ती में ही एक घर किराये पर ले लिया। पत्नी के साथ उसी में रहने लगे।

धैर्य से प्रतीक्षा

तेनजिंग मजदूरी करते। जो भी आय होती, उससे घर चलाते। पर वे 'चोमो-लुंगमा' को भी नहीं भूले थे। उन्हें

उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा थी। वे अधीर नहीं हुए थे। धैर्य उनका मूल मन्त्र था। धैर्य। धीरज!! धैर्य का बड़ा महत्व है जीवन में। कवियों ने धीरज के बड़े गुण गाये हैं।

एक लोककवि की उक्ति है –

''धीरज धरहु तो उतरौ पारा'।

अर्थात् धीरज रखोगे तो पार उतर जाओगे।

एक और कहावत है–

''धीरज का फल मीठा होता है।'' सो, तेनजिंग ने भी धीरज नहीं छोड़ा। उन्हें विश्वास था – 'एक दिन अवसर अवश्य मिलेगा।' तेनजिंग को एक दिन अवसर मिला ही।

आखिर अवसर मिल ही गया

सन् 1935 की बात है। दार्जिलिंग में एक खबर जोरों पर थी। एक अभियान दल पहाड़ों पर जाने वाला था। उसके नेता थे – एरिक शिप्टन। इस दल का उद्देश्य शिखर पर चढ़ाई करना नहीं था। उसका लक्ष्य था – खोज करना। उसके कई लाभ थे। पर्वतारोहियों को आशा थी, शायद एवरेस्ट के लिए कोई नया रास्ता मिल जाए। वे इस बार तिब्बत की ओर से जाना चाहते थे। वहां नार्थ कोल नाम की जगह है। उन्हें उम्मीद थी, शायद वहीं से रास्ता मिल जाए।

यों भी, इस वर्ष शिखर पर चढ़ना खतरे से खाली नहीं था। चढ़ाई के दौरान मानसून आ जाता। अंधड़ चलते। वर्षा होती। बर्फ धंसती। तरह-तरह की विपत्तियाँ आ जातीं। शायद कुछ लोगों के प्राण भी चले जाते। इसीलिए दल का लक्ष्य था – खोज।

अभियान दल के नेता शिप्टन योग्य शेरपाओं की तलाश में थे। दार्जिलिंग में एक हिमालयन क्लब भी था। उसके सेक्रेटरी थे डब्लू जे. किड। वे भी शिप्टन की मदद कर रहे थे। वे अनुभवी शेरपा चाहते थे और उनकी कोई कमी नहीं थी। ये सब एक शेरपा सरदार की सिफारिश पर चुने गए थे। सरदार का नाम था करमा पाल। वह एक व्यापारी भी था। पर तेनजिंग का उससे कोई परिचय न था। तेनजिंग के पास पूर्व अनुभव का प्रमाण-पत्र भी नहीं था। वे नहीं चुने गए। थोड़ी देर के लिए उन्हें निराशा ने घेर लिया। अब क्या हो?

तभी पता चला, दो लोगों की और जरूरत है।

जगह दो लोगों की। उम्मीदवार पहुँचे बीस।

तेनजिंग भी वहीं खाकी बुश जैकेट और पैंट पहन कर लाइन में खड़े हो गए। उनका खयाल था, उस वेशभूषा में वे अनुभवी शेरपा लगेंगे।

शिप्टन और किड ने एक-एक उम्मीदवार की जांच-पड़ताल की। तेनजिंग की बारी आई। उनकी भी जांच-पड़ताल की गई। अनुभव का प्रमाण-पत्र मांगा गया। वह तो उनके पास था ही नहीं। एक और दिक्कत थी। तेनजिंग को तब अंगरेजी भी नहीं आती थी। वे तर्क करना चाहते थे। अपनी बात बताने की कोशिश कर रहे थे। वे कहना चाहते थे। नए लोगों को काम नहीं मिलेगा, तो अनुभव कैसे मिलेगा।

वे चुप थे, भाषा ही नहीं आती थी। पर उन्होंने हार नहीं मानी। इशारे से अपनी बात समझा दी। शिप्टन और किड ने आपस में बात की। फिर तेनजिंग को लाइन से बाहर आने के लिए कहा। तेनजिंग निराश हो गए। उन्हें लगा, उन्हें चुना नहीं गया है।

हारे थके वे जाने लगे। तभी किड ने उन्हें बुलाया। इशारे से बताया, उन्हें चुन लिया गया है।

तेनजिंग की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। पर दूसरे शेरपा नाराज हो गए। यह क्या? एक नए शेरपा को चुना गया। उसे तो कोई अनुभव भी नहीं है, पर तेनजिंग ने उनकी नाराजी का बुरा नहीं माना। उनके शब्दों में – "मैं बहुत खुश था। इतना कि वे सब मिल कर पीटते भी तो मैं बुरा नहीं मानता।"

अभियान दल की मजदूरी तय थी। बारह आना प्रतिदिन। बरफीले प्रदेश में चार आने और बढ़ाये जाने वाले थे। तेनजिंग को लगा, अच्छा काम कर वे ज्यादा पैसा कमा सकेंगे। यह जरूरी था। पर महत्वपूर्ण नहीं। महत्वपूर्ण बात और थी। उनका सपना

पूरा होने जा रहा था। वे पर्वतारोही बनने जा रहे थे।

तेनजिंग ने पत्नी से विदा ली।

एवरेस्ट के लिए नए रास्ते की खोज

एक दिन अभियान दल रवाना हो गया। उसकी दिशा सिक्किम की ओर थी। पहाड़ी रास्ता। कभी चढ़ाई, कभी उतराई। गहरी घाटियाँ। ऊँचे दर्रे। तीन सौ मील का सफर कर वे सब तिब्बत में पहुँचे। पर इस रास्ते में एक लाभ था। सारा सामान खच्चरों पर ले जाया जा सकता था।

अभियान दल धीरे–धीरे सफर करता रहा। एक दिन वे रोंगबुक पहुँचे। पर वे वहां से एवरेस्ट की ओर नहीं गए। उसके आसपास की कई चोटियों पर चढ़े। दर्रे पार किए। उन्हें एवरेस्ट के लिए अच्छे मार्ग की तलाश थी। पर नार्थ कोल से बढ़िया रास्ता कोई मिला ही नहीं। अन्त में वे पूर्वी रोंगबुक ग्लेशियर की ओर बढ़े।

वहाँ अभियान दल ने शिविर लगाए।

पहाड़ों में खबर तेजी से फैलती है। इसका एक कारण है। अभियान दल में शेरपा होते हैं। शेरपा उन्हीं पहाड़ों के होते हैं। उनके परिवार के लोग दार्जिलिंग तो आ नहीं सकते। वे प्रतीक्षा करते रहते हैं। कब कोई अभियान दल आए। बिछुड़े लोगों से मिलना हो। ये लोगों से पूछते रहते हैं।

इस अभियान दल की खबर भी तेजी से फैली। तेनजिंग के पिता को भी मालूम पड़ा। वे बेटे से मिलने शिविर में आए। इसके लिए उन्हें काफी यात्रा करनी पड़ी। वे सोलो-खुम्बू से नांग पा ला गए। वहाँ से शिविर तक पहुँचे।

पिता से मिल कर तेनजिंग बहुत खुश हुए। उन्होंने पिता को बताया, 'हम चोमो–लुंगमा की ओर जाएँगे।'

एक दिन अभियान दल के लोग ग्लेशियर पहुँच गए। वहाँ कोई जीवन नहीं था। उनके ठीक सामने, ठीक ऊपर आकाश में भी दो–तीन मील ऊँची चट्टानें। और बर्फ की मीनार थी। तेनजिंग को घर की याद हो आई। सोचा, कितनी अजीब बात है। उनका घर यहाँ से कुछ मील दूर ही है। इसी पर्वत की छाया में उनका बचपन बीता है। यहीं उन्होंने अपने पिता के याकों की देखभाल की है। पर पर्वत इस ओर से बिलकुल अलग लग रहा था। उसे पहचान पाना कठिन था। पर लोगों का कहना था, 'यही चोमो–लुंगमा है।' वे भी यह जानते थे कि चोमो-लुंगमा के सिवाय और कोई पर्वत इतना ऊँचा नहीं हो सकता।

शिविर में काम काफी कठिन था। एक शेरपा को नब्बे पौंड वजन का सामान ले जाना पड़ता था। पर तेनजिंग के मन में उत्साह था। उन्हें बोझ फूल जैसा हलका लग रहा था। वे सोचते थे, 'मुझे अपने सपने को पूरा करने का अवसर मिल रहा है।'

इस अभियान में तेनजिंग ने कई नई बातें सीखीं। उन्हें कई नई चीज़ों की जानकारी हुई। पर अभी बहुत कुछ सीखना था। पर्वतारोहण की तकनीक समझनी थी। रस्सी का उपयोग, कुल्हाड़ी से बर्फ पर सीढ़ियाँ बनाना, शिविर खड़ा करना। उसे खोलना। अच्छे रास्ते ढूंढना।

तेनजिंग नए शेरपा थे। इसलिए उन्हें ज्यादा काम नहीं दिया गया। पर वे अपने मन से सारा काम करते। अभियान दल के सदस्य भी उनसे खुश थे। अभियान दल 22 हजार फुट के आगे नार्थ कोल तक गया। शेरपाओं ने वहाँ तक सामान पहुँचाया। उनमें तेनजिंग भी थे। फिर एक दिन अभियान दल वापस लौट पड़ा। सभी शेरपा खुश थे। घर लौटने की खुशी किसे नहीं होती। पर तेनजिंग निराश थे। वे पर्वत पर और ऊपर जाना चाहते थे। बाद में भी उनके मन में यही भावना रही। जब भी वे ऐवरेस्ट की ओर गए, यही मन हुआ, ऊपर और ऊपर जाएं। पर

उस बार वे ज्यादा कुछ नहीं कर सकते थे। उन सबको वापस लौटना ही था। पर उन्होंने स्वयं से कहा, 'अरे, अभी तो तुम केवल इक्कीस बरस के हो। और भी अभियान होंगे। शीघ्र बहुत शीघ्र तुम भी एक सच्चे 'टाइगर' बनोगे।'

एक और अभियान

शिप्टन का दल लौट आया था। उसका तेनजिंग के लिए बेहद महत्व था। अब वे अनुभवहीन नहीं थे। अब उनके पास भी प्रमाण–पत्र था–पर्वतारोहण का। अब उन्हें कोई कठिनाई न होगी किसी अभियान में शामिल होने के लिए।

तेनजिंग दार्जीलिंग में ही रहा करते थे। उन्हें एक पुत्र भी हुआ। उन्होंने उसका नाम रखा–नीमा दोरजे। वह बेहद सुन्दर था। लेकिन वह चार वर्ष की उम्र में नहीं रहा। तेनजिंग को तथा उनकी पत्नी दावाफुटी को बेहद दु:ख हुआ। पर मृत्यु पर किसका बस।

सन् 1935 – पतझड़ का मौसम। एक और अभियान। पर यह एवरेस्ट के लिए नहीं था।

सिक्किम में एक पर्वत है– काबरू। यह 24 हजार फुट ऊँचा है। कंचनजंगा हिमालय की प्रसिद्ध चोटी है। काबरू इसी चोटी के पास है। यह अभियान–दल विशेष बड़ा न था। पर्वतरोहियों में डाक-तार विभाग के एक इंजीनियर थे। नाम था कुक। उनके एक जरमन मित्र भी थे। शेरपा थे– तेनजिंग, अंग त्सेरिंग, पासांग फुटर और पासांग कि कुती। इनमें तेनजिंग उम्र में सबसे छोटे थे। इसलिए उन्हें सबसे अधिक बोझ उठाना पड़ता था। इस अभियान दल में कोई विशेष घटना नहीं हुई।

सरदियों में शेरपा आराम करते हैं। सरदियों में पर्वतोरोहण नहीं होता। चारों ओर बर्फ ही बर्फ। तापमान भी बहुत कम होता है। तेनजिंग ने भी सरदियों में आराम किया।

पतझड़ गया। पतझड़ के जाते ही वसंत आ गया। पर्वतों पर फिर अभियान होने लगे। तेनजिंग भी दो अभियानों में शामिल हुए। इनमें से एक एवरेस्ट के लिए था। -

एवरेस्ट यानी चोमो-लुंगमा।

अब तेनजिंग आसानी से अभियान—दल में शामिल हो सकते थे। एक और बात थी। इस अभियान दल में एरिक शिप्टन भी थे। उनके साथ तेनजिंग काम कर चुके थे। इनके अलावा और भी कई पर्वतारोही थे। वे सभी प्रसिद्ध थे। यह दल बहुत बड़ा भी था। उसके पास कई नए उपकरण भी थे। सबको उम्मीद थी, शायद इस बार वे सफल हो जाएं। एवरेस्ट तक पहुँच सकें।

पर परिस्थितियाँ विपरीत हो गईं। मौसम बेहद खराब हो गया था। अचानक बरसात शुरू हो गई। लगता था, जैसे मानसून आ गया है। पर्वतारोहियों ने ग्लेशियरों पर किसी तरह तीन शिविर लगाए। इस समय बर्फ भी लगातार पड़ने लगी। वे किसी तरह नार्थ कोल तक पहुँचे। वहाँ ढलान बेहद सपाट थी। उन्होंने उस पर चढ़ना शुरू किया। पर यह क्या? वे अचानक बर्फ में धंसते चले गए। कहीं—कहीं छाती तक बर्फ थी। यह कमरतोड़ काम था। खतरे भी कम नहीं थे। बर्फ ने सारी चीजों को ढंक लिया था। पहाड़ों में बड़ी—बड़ी खाइयाँ होती हैं, दरारें होती हैं। बर्फ ने सबको छिपा दिया था। पता ही नहीं चलता था, कहाँ क्या है। पर्वतारोही किसी भी क्षण इन खाइयों में गिर सकते थे। एक और भय था। बर्फ—स्खलन का भय। उन्हें सन् 1922 की घटना याद थी। बर्फ धंसने के कारण कई शेरपा मारे गए थे।

फिर भी किसी तरह कुछ लोग नार्थ कोल तक पहुँचे। तेनजिंग भी थे। वहाँ भी मौसम बेहद खराब था। बर्फ लगातार गिर रही थी। इतनी बर्फ कि एक दूसरे को देखना कठिन। किसी तरह बर्फ थमी। लोगों ने चैन की सांस ली। पर एक दूसरी मुसीबत आ गई। तेज हवाएँ चलने लगीं। फिर तो कभी बर्फ

गिरती, कभी तेज हवा चलती। लगता, पर्वतारोहियों को उड़ाकर नीचे ले जाएगी। संकट में ही साहस की परीक्षा होती है। कुछ लोग अभी भी आगे जाने के लिए तैयार थे।

लेकिन दल के नेता समझदार थे। वे बोले, 'नहीं', मौसम बेहद खतरनाक है। हम कोई दुर्घटना नहीं चाहते। कोई जनहानि का खतरा नहीं उठाना चाहते। एवरेस्ट कहीं भागा नहीं जाता। हम अगले वर्ष फिर आएंगे। तब तक एवरेस्ट यहीं बना रहेगा।

बात भी सही थी। एवरेस्ट तो सदियों से वहाँ था। आगे भी बना रहेगा। अतः अभियान—दल लौट पड़ा। लौटना भी आसान नहीं था। उसमें भी कई खतरे थे।

ऐसा ही एक खतरा गाडोंग पामा नामक एक स्थान में था। वहाँ एक नदी थी। पहाड़ी नदी, तेज बहाव। कोई पक्का पुल नहीं। उसे पार करने के लिए एक रस्सी बंधी थी। उसी के सहारे नदी पार करनी थी। एक—एक कर सभी पार हो गए। उन्होंने नदी पार करने में एक जाल की सहायता भी ली। एक शेरपा ज्यादा साहसी था। साहसी नहीं, दुस्साहसी। बोला, "मैं बिना जाल के नदी पार करूंगा।" लोगों ने उसे मना किया, पर वह नहीं माना। और इसका फल उसे भुगतना पड़ा। वह नदी में आधी दूर तक पहुँच गया। वहाँ धार तेज थी। संभल न पाया। धार में फंस गया। उसके हाथ से रस्सी छूट गई। और! और वही हुआ, जिसका भय था। वह धार में बह गया। कुछ लोगों ने नदी में कूद कर उसे बचाना चाहा। पर बहाव तेज था। वे उसे बचा नहीं पाए।

आखिर एक दुर्घटना हो ही गई। लोग उदास हो गए। पर यात्रा तो करनी ही थी। एक दिन वे सब दार्जिलिंग लौट आए।

गढ़वाल की ओर

तेनजिंग का मन बेचैन था। वे खाली नहीं बैठना चाहते थे।

शीघ्र ही उन्हें एक अवसर मिल गया। एरिक शिप्टन ने मध्य हिमालय में जाने का निश्चय किया। उन्होंने तेनजिंग को भी चलने के लिए कहा। वे तो इसी की प्रतीक्षा में थे। फौरन तैयार हो गए। खाली बैठने से कुछ न कुछ करना बेहतर है। इस अभियान में तेनजिंग ने कई नई चीजें देखीं। वे पहली बार ट्रेन में चढ़े। पहली बार उन्होंने बड़े–बड़े शहर देखे। कलकत्ता, दिल्ली और दूसरे शहर। यात्रा में हमेशा नए–नए लोगों से परिचय होता है।

शिप्टन ने तेनजिंग का परिचय कई लोगों से कराया। इनमें एक थे ओस मास्ट्राम। वे 'रायल इंजीनियर्स कोर' में मेजर थे। वे गढ़वाल में सर्वेक्षण कर रहे थे। उन्होंने तेनजिंग से साथ चलने को कहा। वे तत्काल तैयार हो गए। उसी वर्ष नंदादेवी शिखर पर चढ़ाई की गई थी। वह चोटी 25,660 फुट ऊँची है। पहली बार मनुष्य इतनी ऊँचाई पर चढ़ा था। लोगों में खुशी थी। ओस मास्ट्राम भी नंदादेवी की ओर जा रहे थे। उन्हें उसके आस-पास के क्षेत्रों का सर्वेक्षण करना था।

इसी बीच तेनजिंग बीमार पड़ गए। वहाँ कभी तेज गरमी पड़ती। कभी बरसात होती। एवरेस्ट यात्रा के कारण वे कुछ कमजोर भी हो गए थे। बेहद थके हुए भी थे। उन्हें बुखार ने दबोच लिया। मेजर ओस मास्ट्राम भले व्यक्ति थे। दल के और भी व्यक्ति भले थे। मेजर ओस मास्ट्राम कभी तेनजिंग को अपनी पीठ पर लादते। कभी कोई अन्य सदस्य उन्हें उठाता।

मेजर ओस मास्ट्राम को जड़ी–बूटियों का भी ज्ञान था। उन्होंने तेनजिंग को बताया, "पित्त की खराबी के कारण तुम्हें बुखार आया है। यहाँ चट्टानों पर एक काई होती है। उसे गरम पानी में पियो। ठीक हो जाओगे।" तेनजिंग ने यही किया। गरम पानी में काई पीते ही उन्हें उलटियाँ शुरू हो गईं। वे और कमजोर हो गए। पर एक बात जरूर हुई। उनका बुखार जाता रहा। वे शीघ्र ही ठीक हो गए।

सर्वेक्षण का काम समाप्त हुआ। तेनजिंग फिर दार्जिलिंग लौट आए। दार्जिलिंग के आस–पास कई दर्शनीय स्थल है। पर्वत–शिखर हैं। सैर करने दूर–दूर से यात्री आते हैं। शेरपा उनकी सहायता करते हैं। शहर के पास एक पहाड़ है। नाम है- टाइगर हिल। आकाश साफ हो, मौसम अच्छा हो तो यहाँ से एवरेस्ट दिखाई देता है। उत्तर में दो शिखर हैं। ये हैं- संदकपू और फालुट। वहाँ से एवरेस्ट और भी अच्छी तरह दिखता है। तेनजिग भी वहाँ तक जाते थे। एवरेस्ट को देखते थे। उन्हें संतोष होता। एवरेस्ट अभी है। पर उन्हें दुःख भी होता, कारण, वे वहाँ जा नहीं सकते थे। केवल उसे देख सकते थे। पर प्रतीक्षा में भी आनंद होता है। उन्हें विश्वास था, एक न एक दिन वे जरूर वहाँ पहुँचेंगे।

सन् 1937। इस वर्ष एवरेस्ट के लिए कोई अभियान दल नहीं जा रहा था। अतः तेनजिंग फिर गढ़वाल चले गए। वहाँ उन्हें दो शिक्षकों के साथ पर्वतारोहण करना था। बेकार बैठने से तो यह अच्छा था। इस अभियान में तेनजिंग को तरह–तरह के अनुभव हुए। उनके साहस की भी परीक्षा हुई।

एक दिन वे और उनके साथी बिछड़ गए। घना कोहरा। फिर बरसात शुरू हो गई। तेनजिंग के साथ मार्टिन थे। वे एक शिक्षक थे। उन दोनों के पास न तम्बू था, न भोजन। वे साथियों को पुकारते रहे। पर कौन सुनता। वे कुहासे में, बरसात में भटकते रहे। अंत में उन्हें एक गुफा दिखाई दी। उन्होंने वहाँ दो दिन बिताए। आखिर मौसम साफ हुआ और वे शिविर तक लौटे।

बाद में उन्होंने तिब्बत के एक ओर यात्रा की। यह यात्रा लम्बी थी। यात्रा सफल रही। पर लौटते वक्त राह भूल गए। घने जंगल। जरा–सी गलती, बड़ा–सा कष्ट। उनके पास भोजन की भी कमी हो गई। उधर भूख लग रही थी। तभी एक दिलचस्प घटना घट गई।

हुआ यह कि उधर कुछ गाँव वाले आ निकले। वे दोपहर का भोजन करने रुके थे। तेनजिंग और उनके साथियों ने उनसे भोजन मांगा। कहा, "पैसे ले लो"। पर गाँव वाले न माने।

तेनजिंग को एक उपाय सूझा। वे जानते थे। गाँव वाले छूआछूत मानते हैं। अजनबी का छुआ भोजन नहीं खाते। उन्होंने श्री गिब्सन को यह बताया। फिर कहा, 'वे बारी–बारी से चीजें छुएं। पूछें कि 'यह क्या है?' 'वह क्या है?' श्री गिब्सन ने यही किया। गाँव वाले बेहद नाराज हुए। श्री गिब्सन ने उन्हें पैसे देने चाहे। पर उन्होंने पैसे नहीं लिए। बोले, 'हम ग्राम–प्रधान से शिकायत करेंगे।' और वे गाँव की ओर दौड़ गए। इधर दल अपनी राह चल पड़ा।

इस यात्रा में तेनजिंग बनी दर्रे तक पहुँचे। बनी दर्रा काफी ऊँचाई पर है। वे बद्रीनाथ भी गए। उसके बाद वे दार्जिलिंग लौट आए।

एक यात्रा जानी-पहचानी

सन् 1938 का वसंत। पर्वतारोहण के लिए अच्छा समय। एवरेस्ट के लिए एक और अभियान। उसके नेता थे टिल मैन– एक प्रसिद्ध पर्वतारोही। यह छोटा–सा दल था। उसमें शेरपा भी थे। तेनजिंग भी थे। यात्रा जानी–पहचानी थी। अप्रैल में वे रोंगबुक मठ के पार आधार शिविर तक पहुँच गए। आधार शिविर: इसे बेस कैंप भी कहते हैं। यहीं से असली अभियान शुरू होता है। एवरेस्ट के लिए आसान मार्ग की खोज की जाने लगी। टिल मैन ने तेनजिंग को साथ लिया। दो शेरपा और थे। वे ल्होता के दर्रे तक गए।

तेनजिंग बेहद खुश थे। वे एवरेस्ट के दोनों बाजुओं को देख सकते थे। वहाँ से उन्हें थामे का अपना पुराना घर भी दिखाई पड़ता था। नीचे खुम्बू ग्लेशियर था। वहाँ याक चर रहे थे। कैप्टेन मेलोरी इसी ल्होता दर्रे तक आए थे। टिल मैन और अन्य शेरपाओं ने दर्रे को पार किया। टिल मैन को एक आशा थी। शायद वहाँ से अच्छा मार्ग मिल जाए। पर वहाँ सपाट ढ़लान थी। चारों ओर बर्फ ही बर्फ। उतरना आसान था, पर चढ़ना कठिन। प्राय: असंभव। दर्रे पर घना कुहरा था। बादल भी थे। खुम्बू के पार एक बर्फीला कछार था। मेलोरी ने उसको एक नाम दिया था। यह एक वेलश नाम था- 'वेस्टर्न क्वम'।

वहाँ कोई ठीक रास्ता नहीं मिला। दल के लोग आधार शिविर लौट आए। फिर वे नार्थ कोल के लिए रवाना हुए। यहीं एक दुर्घटना होते-होते बची।

कोल के नीचे बर्फ धंसने का खतरा हमेशा बना रहता है।

यहाँ तेनजिंग पहली बार उसकी चपेट में आए। दो रस्सियों के सहारे छह लोग चढ़ाई चढ़ रहे थे। ये थे कैप्टेन ओलिवर, तेनजिंग और शेरपा बांगड़ी नोबरू। ये तीनों एक रस्सी पर थे। दूसरी रस्सी पर थे- टिल मैन तथा दो दूसरे शेरपा। बर्फ की ढलान सपाट थी। वह छाती तक गहरी भी थी। वे धीरे—धीरे कठिनाई से बढ़ रहे थे। सहसा चारों ओर से बर्फ तड़कने की आवाजें आईं। बर्फ धसकने लगी। अगले पल वे भी उसके साथ नीचे खिसकने लगे। तेनजिंग के पैर उखड़ गए। वे ढुलकने लगे। उनका सिर बर्फ में जा धंसा। चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा। सन् 1922 में यही दुर्घटना घटी थी। तेनजिंग को उसकी याद थी। उन्होंने सोचा, दोबारा वैसी ही दुर्घटना घट रही है। उनका अंत आ पहुँचा है। पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। वे अपने कंधे के ऊपर बार—बार बर्फ में कुल्हाड़ी चलाने लगे। उनकी कोशिश थी कि कोई सहारा मिल जाए। लुढ़कने से वे बच जाएं। उनकी कोशिश सफल ही हुई। उनकी कुल्हाड़ी एक ठोस बर्फ में धंस गई। वे उसके सहारे ऊपर चढ़े।

पर्वतारोहण के दौरान ऐसी घटनाएँ घटती ही रहती हैं। उस समय साहस से काम लेना पड़ता है। बुद्धि लड़ानी पड़ती है। निराशा से काम नहीं चलता। जीवन में यही बात है। निराशा हमें असफलता के गर्त में और धकेलती है। आशा की डोर हमें ऊपर ले जाती है। सफल बनाती है। तेनजिंग ने भी आशा की डोर नहीं छोड़ी थी। अंततः वे सफल हुए।

टाइगर का पदक

एक दिन किसी तरह वे सब नार्थ कोल पहुँचे। वहाँ उन्होंने तीसरा शिविर लगाया। तेनजिंग तीसरी बार यहाँ तक पहुँचे थे। पर इस बार उन्हें और ऊपर जाना था। वे अन्य शेरपाओं के साथ

आगे बढ़े। चौथा शिविर भी बनाया, फिर पाँचवाँ शिविर भी। चट्टानों पर बर्फ ही बर्फ। पर्वतारोही निराश हो गए। उन्होंने शिविर तक पहुँचने की आशा छोड़ दी। पर क्षण भर बाद उनकी निराशा टूटी। वे सब छठवाँ शिविर बनाने की तैयारी करने लगे। पर एक समस्या थी। शेरपा शिविर का सामान लेकर नहीं पहुँचे थे। अब क्या हो? साथ के शेरपाओं की हिम्मत टूट गई थी। वे बोले, 'हम सामान लेने नहीं जाएँगे। जाएँगे तो फिर वापस नहीं आएँगे।'

बड़ी समस्या आ गई। यात्रा रुक गई।

तेनजिंग हारने वाले व्यक्ति नहीं थे। वे बोले, 'अच्छा, मैं जाता हूँ। सामान लेकर आता हूँ।

वे अकेले नीचे गए। देखा, शेरपा सामान छोड़कर चले गए हैं। तेनजिंग क्या करते। अकेले पीठ पर सामान लादा। फिर चल पड़े। पर यात्रा आसान न थी। एक तो जगह–जगह फिसलन। दूसरे, पीठ पर सामान। एक बार तो वे बुरी तरह फिसले। पर उन्होंने कुल्हाड़ी के सहारे स्वयं को संभाल लिया। वे बच गए। नहीं संभलते तो? नीचे, एक मील गहरे रोंगबुक ग्लेशियर में जा गिरते।

अंधेरा भी छाने लगा था। यह और बड़ी मुसीबत थी। पर तेनजिंग जीवट के आदमी थे। वे किसी तरह पाँचवें शिविर तक पहुँच ही गए। उनकी बड़ी प्रशंसा की गई। बीस रुपये का पुरस्कार दिया गया। सब ने रात वहीं बिताई। अगले दिन फिर चढ़ाई शुरू हुई।

वे सब 27 हजार फुट तक जा पहुँचे। यहाँ छठवाँ शिविर लगाया गया। वे पहली बार इतनी ऊँचाई तक पहुँचे थे। सामान पहुँचा कर शेरपा नीचे लौट आए। उनके साथ तेनजिंग भी थे। लौटते वक्त दूसरे दल के लोग उन्हें मिले। उन्हें आशा थी कि इस बार एवरेस्ट पर पहुँच जाएँगे। पर एवरेस्ट अविजित रहा।

पर्वतारोही शीघ्र ही नीचे लौट आए। उन्हें सफलता की संभावना नहीं दिखाई दे रही थी। फिर मानसून भी आने वाला था। सो वे सब नीचे लौटने लगे।

मौसम बिगड़ने लगा। हिमपात शुरू हो गया। बर्फ भी धंसने लगी। किसी तरह वे एक–एक शिविर को पार करने लगे। यहीं एक दुर्घटना घटी। एक शेरपा पक्षाघात का शिकार हो गया। लेकिन वह जीवित रहा।

टिल मैन एक उदार पर्वतारोही थे। वे साहस की कद्र करते थे। उन्होंने एक प्रथा चलाई। जो शेरपा सबसे ज्यादा ऊँचाई पर पहुँचेगा, उसे 'टाइगर' की पदवी दी जाएगी। एक पदक दिया जाएगा। यों यह प्रथा पहले भी थी। पर टिल मैन ने उसे अधिकृत रूप दिया।

तेनजिंग को भी टाइगर पदक दिया गया। रिकार्ड में उनका भी नाम दर्ज किया गया। तेनजिंग बेहद खुश थे क्योंकि अब वे एक टाइगर थे। तेनजिंग कहते थे-

"शेरपाओं की जिंदगी नाविकों की जिंदगी की ही भांति होती है। वे अक्सर अपने घर परिवार से दूर रहते हैं।" सन् 1939 में तेनजिंग को फिर पहाड़ पर जाना पड़ा। पर एवरेस्ट की ओर नहीं। इस बार उन्हें एक बिलकुल नई जगह जाना था।

तिदिथ मीरः एक बड़ी चुनौती

सिंधु नदी के पार हिंदुकुश पर्वतमाला है। यह भी हिमालय का ही हिस्सा है। यहाँ तिदिथ मीर नामक एक चोटी है। तेनजिंग को यहीं एक महिला के साथ जाना था। उनका नाम था श्रीमती बेदिल स्मीटन। वे दार्जिलिंग आई थीं। शेरपाओं का चुनाव करने। तेनजिंग से पूछा गया। वे फौरन तैयार हो गए। तेनजिंग शेरपाओं के साथ लाहौर गए। वहाँ श्रीमती स्मीटन के पति थे। वे

कैप्टेन थे। उनके एक मित्र भी थे। नाम था मेजर आगिल। वे सब तिदिथ मीर की ओर जल पड़े।

यह शिखर 25,260 फुट ऊँचा है। स्मीटन का दल बेहद छोटा था। सामान भी पर्याप्त नहीं था। फिर भी वे 23 हजार फुट तक चढ़ गए। पर इसके आगे नहीं। हवा तेज थी। बर्फ से भी ठंडी। श्रीमती स्मीटन भी अच्छी पर्वतारोही थीं। वे साहसी भी थीं। अंत तक वे साथ रहीं। पर वे सब शिविर तक नहीं पहुँचे। क्योंकि उनके पास उपकरण नहीं थे। वे लौट आए। पर निराश नहीं थे। उन्होंने हिम्मत की कमी के कारण अभियान समाप्त नहीं किया था।

शेष शेरपा दार्जिलिंग लौट गए। पर तेनजिंग वहीं रह गए। चित्राल में उनकी भेंट मेजर व्हाइट से हुई। उन्होंने ही स्मीटन की सहायता की थी। मेजर व्हाइट ने तेनजिंग से पूछा, "तुम मेरे साथ काम करोगे?"

"क्यों नहीं?" उन्होंने उत्तर दिया।

और इस तरह उनकी एक नई जिंदगी शुरू हुई।

तब भारतीय सेना में एक प्रसिद्ध रेजीमेंट थी। नाम था- 'चित्राल स्काउट्स'। मेजर व्हाइट उसी में अफसर थे। तेनजिंग वहीं काम करने लगे। धीरे–धीरे कई महीने बीत गए। इसी बीच उन्हें एक बुरी खबर मिली। उनके बेटे नीमा दोरजे का देहांत हो गया था। तेनजिंग उसे बेहद प्यार करते थे। वे बहुत दुखी हुए। मेजर व्हाइट को उनसे हमदर्दी थी। वे बोले, 'तेनजिंग, तुम दार्जिलिंग जाओ। परिवार से मिल आओ। चाहो तो उन्हें भी ले आओ।'

तेनजिंग दार्जिलिंग के लिए रवाना हुए। वे वहाँ कुछ दिन रहे। उनके घर एक बेटी ने जन्म लिया। वे खुश हुए। नीमा का दुःख थोड़ा भूल गए। उन्होंने अपनी दूसरी बेटी का भी नाम रखा- 'नीमा'। फिर वे परिवार के साथ चित्राल लौट आए।

चित्राल उन्हें भा गया था। मेजर व्हाइट उन्हें बेटे के समान मानते थे।

रेजीमेंट के साथ तेनजिंग कई स्थानों पर गए। वे कश्मीर में भी रहे। वहाँ उन्होंने बर्फ पर स्कीइंग सीखी। चित्राल में उन्होंने कई भाषाएँ सीखीं। हिन्दुस्तानी, चित्राली और पश्तो। उनका अंग्रेजी का ज्ञान भी बढ़ा।

वे युद्ध के दिन थे। चारों ओर गरमागरमी थी। तभी तेनजिंग पर एक और विपत्ति आई। उनकी पत्नी दावा फुटी बीमार रहती थीं। उन्होंने उनका काफी इलाज कराया। पर उन्हें बचा न सके। सन् 1944 में उनका देहांत हो गया। उनकी दोनों बेटियाँ बिना माँ की हो गईं। उनके नाम थे पेम–पेम और नीमा। वे छोटी थीं। तेनजिंग ने उनके लिए एक आया रखी। पर उससे काम नहीं चला। तेनजिंग ने दार्जिलिंग लौटने का निश्चय किया।

सन् 1946 में वे दार्जिलिंग लौट आए। यहाँ लोगों ने उनसे दूसरा विवाह करने के लिए कहा। बच्चियों के लिए भी नई माँ जरूरी थी। तेनजिंग ने विवाह कर लिया। उनकी नई पत्नी दावा फुटी की चचेरी बहन थी। तेनजिंग उसे जानते थे। उसका नाम था- अंग लहमू।

छोटे–छोटे अभियान और एक खतरनाक सपना

अब तेनजिंग का जीवन दार्जिलिंग में बीतने लगा। बीच–बीच में वे छोटे–छोटे अभियानों पर जाते रहे। युद्ध भी समाप्त हो गया। भारत भी आजादी की राह बढ़ने लगा।

सन् 1947 आया। वसंत – पर्वतारोहण का समय।

दार्जिलिंग में डेनमान नाम के एक साहसी पर्वतारोही आए। उनका जन्म कनाडा में हुआ था। वे इंग्लैंड में पढ़े थे। फिर अफरीका में बस गए थे।

डेनमान का एक सपना था। एक खतरनाक सपना। वे एवरेस्ट पर अकेले चढ़ना चाहते थे। चुपचाप, बिना किसी ताम-झाम के। उनके पास पैसे भी ज्यादा नहीं थे। तेनजिंग डेनमान से मिले। उन्हें तेनजिंग के अनुभव के बारे में पता चला। वे उन्हें साथ चलने के लिए कहने लगे।

डेनमान जीवट के आदमी थे। उनके पास तिब्बत में जाने की अनुमति नहीं थी। फिर भी एवरेस्ट तक जाना चाहते थे – तिब्बत की ओर से। तेनजिंग विचार में पड़ गए। कैसे जाएँगे वहाँ तक। रास्ते में ही पकड़ लिए जाएँगे। उन्होंने डेनमान को समझाने की कोशिश की। पर उनका तो एक ही लक्ष्य था। एवरेस्ट।

तेनजिंग भी एवरेस्ट जाना चाहते थे। अंततः वे तैयार हो गए। किसी तरह छिपते–छिपाते, सिपाहियों से बचते, वे रोंगबुक मठ तक पहुँचे।

सामने एवरेस्ट था। गगनचुंबी। बर्फ से ढंका। तेनजिंग रोमांचित हो उठे। वे नौ वर्ष बाद उसे देख रहे थे। मन हुआ, तत्काल शिखर तक तहुँच जाएँ। पर चाहने से क्या होता है। लक्ष्य पाने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। तेनजिंग अपने साथियों सहित शिविर बनाने लगे। वे केवल तीन व्यक्ति थे। हर दिन नया शिविर बना डालते। वे कोल तक पहुँच गए। पर इसी बीच डेनमान बेहद कमजोर हो गए। कभी–कभी तो वे चल भी नहीं पाते। फिर भी उन्होंने कोल की ढलान पर चढ़ने की कोशिश की। हवा तेज हो गई थी। ठंड अलग पड़ रही थी। एक कदम भी आगे बढ़ाना कठिन था। हार कर वे सब तम्बू में लौट आए।

पराजय। एक बार फिर पराजय। डेनमान जान गए – एवरेस्ट तक पहुँचना कठिन है। वे साहसी थे, दृढ़ निश्चयी भी थे। समझदार भी थे। वे जानते थे, आगे बढ़ना जानबूझ कर

मौत के मुँह में जाना है। उन्होंने लौटने का निश्चय कर लिया।
और वे सब तेजी से लौटने लगे।

साथी की सहायता: परम धर्म

दार्जिलिंग लौटते ही तेनजिंग को एक और काम मिल गया। एक अभियान दल गढ़वाल जा रहा था। वे भी उसमें शामिल किए गए। इस अभियान के दौरान एक घटना घट गई। शिखर पर जाते समय दो लोग दुर्घटना के शिकार हो गए। ये थे सटर नामक एक पर्वतारोही और एक शेरपा वागंडी नोबरू।

पर्वत पर शिखर की ओर जाते समय वे दोनों एक रस्सी से बंधे हुए थे। वे एक बर्फ की संकरी चट्टान पर चढ़ रहे थे। एकाएक वे फिसल गए। वें संभल न पाए और लुढ़कते–लुढ़कते हजारों फुट नीचे जा गिरे। सब लोग घबरा गए। नीचे देखा। पता ही नहीं चल रहा था कि वे जीवित हैं या मृत। उनके पास कोई जा भी नहीं सकता था। रास्ता खतरनाक और चक्करदार था। उन तक पहुँचने में घण्टों लग जाते। सौभाग्य की बात। सटर ज्यादा घायल नहीं हुए थे। पर वागंडी नोबरू के साथ और कुछ घटा था। उसका एक पैर टूट गया था। सटर उसे ऊपर तक ला नहीं सकते थे। उन्होंने जैसे–तैसे एक आपातकालीन शिविर बनाया। उसमें बागंडी नोबरू को लिटाया। उससे कहा, 'घबराना नहीं। हम लोग तुम्हें लेने आएँगे।' फिर जैसे–तैसे वे नीचे के शिविर में आए। तब तक शाम घिर आई थी। कुछ किया नहीं जा सकता था।

तेनजिंग और अन्य पर्वतारोहियों ने रात बेचैनी से काटी। दूसरे दिन तड़के ही बचाव दल चल पड़ा। उसमें तेनजिंग भी थे। और लोग बेहद थके हुए थे। पर तेनजिंग विश्राम भी कर चुके थे। ताजगी अनुभव कर रहे थे। फिर बागंडी नोबरू उनका

पुराना दोस्त था। सन् 1938 में वे साथ–साथ एवरेस्ट तक गए थे। वह उनका सहयोगी 'टाइगर' था। उसे बचाना जरूरी था।

भाग्य से मौसम ठीक था। कुछ ही घण्टों में वे वागंडी नोबरु के शिविर तक पहुँच गए। उन्होंने लपककर परदा खोला। वहाँ का दृश्य देखकर वे भौंचक्के रह गए।

वागंडी नोबरु जीवित था, पर उसके गले में एक घाव भी था।

बाद में वागंडी नोबरु ने बताया। पिछली रात वह भ्रम में पड़ गया। उसे कुछ सूझ नहीं पड़ रहा था। सटर ने क्या कहा, यह भी उसे पता नहीं था। उसे लगा, सटर उसे अकेला छोड़कर चले गए हैं। बर्फ में जम जाने के लिए। मर जाने के लिए। उसे कुछ नहीं सूझा। घबराहट में उसने खुदकुशी ही करनी चाही। उसने चाकू निकाला और अपना गला काट लिया, पर वह कमजोर था। गला पूरी तरह नहीं काट पाया। फिर उसे अपने परिवार की याद आई। उसने तय किया, मुझे जिंदा रहना है। मरना नहीं है। उसके नहीं रहने पर परिवार अनाथ हो जाएगा। वह सारी रात चुपचाप पड़ा रहा। फलतः रक्त जम गया। बहने से रुक गया। और, इस तरह वह बच गया।

तेनजिंग और उनके साथी किसी तरह स्ट्रेचर बनाकर वागंडी नोबरु को नीचे लाए। फिर उसे आधार शिविर में भेजा गया। वहाँ से चिकित्सा के लिए उसे मसूरी रवाना किया गया।

शेष पर्वतारोही फिर अपने काम में लग गए। पर वे उदास थे। कुछ–कुछ निराश भी थे। लेकिन वे केदारनाथ शिविर पर चढ़ने में सफल रहे। उनमें तेनजिंग भी थे। अब दार्जिलिंग वापसी की यात्रा शुरू हुई।

एक यात्रा पवित्र भूमि की

तिब्बत – पहाड़ों के बीच एक दुर्गम प्रदेश। दलाई लामा की जन्म–भूमि। ल्हासा – तिब्बत की राजधानी। एक पवित्र तीर्थ।

तेनजिंग कई बार तिब्बत हो आए थे। पर वे ल्हासा तक नहीं गए थे। अब उन्हें ल्हासा जाने का अवसर मिला।

क्या कोई पर्वतारोहण – अभियान था?

नहीं। यह यात्रा ज्ञान की खोज के लिए थी।

और, इस यात्रा के नेता थे, प्रोफेसर गिस्मे तुक्की।

प्रोफेसर गिस्मे तुक्की इटली के निवासी थे। पर उन्हें पौर्वात्य कला से प्रेम था। पौर्वात्य संस्कृति के वे विद्वान थे।

'पौर्वात्य' शब्द का अर्थ क्या है?'

'पौर्वात्य' का अर्थ है, पूर्व का।

धरती के दो गोलार्द्ध हैं। अर्थात दो भाग हैं। इनमें से एक पूर्वी भाग, दूसरा है पश्चिमी भाग।

पूर्व के भाग में है, भारत, चीन, जापान अर्थात एशिया।

पश्चिमी भाग में है, यूरोप, अमरीका।

पौर्वात्य कला – संस्कृति का मतलब है, पूर्व के देशों की कला और संस्कृति।

प्रो. तुक्की इन्हीं के विद्वान थे। वे सात बार तिब्बत की यात्रा कर चुके थे। पर ये यात्राएँ मनोरंजन के लिए नहीं थीं। इन यात्राओं में वे दुर्लभ ग्रन्थ खोजते थे। पुरानी कला की वस्तुएँ एकत्र करते थे।

एक बार वे फिर तिब्बत जाना चाहते थे। इसीलिए

दार्जिलिंग आए थे। यात्रा के लिए पोर्टरों की, सहायकों की जरूरत थी। और, उनके लिए दार्जिलिंग ही उपयुक्त स्थान था।

प्रो. तुक्की ने कुछ शेरपा नियुक्त किए और यात्रा पर चल पड़े। तेनजिंग इस दल में नहीं थे। उन्होंने आवेदन किया था, पर तब तक जगहें भर चुकी थीं। तेनजिंग बेहद निराश हुए। इसके दो कारण थे। एक तो उन्हें काम नहीं मिला था। दूसरे, ल्हासा जाने का अच्छा अवसर निकल गया था।

कुछ ही दिनों बाद की बात है। तेनजिंग को यात्रा में शामिल होने का निमंत्रण मिला। इसका एक कारण था। प्रो. तुक्की अपने सहायकों से संतुष्ट न थे। वे एक अच्छा सहायक चाहते थे। ऐसा सहायक, जो कई भाषाएँ जानता हो। जैसे उसे अंग्रेजी का ज्ञान हो। हिन्दुस्तानी आती हो, तिब्बती भी जानता हो। तेनजिंग में ये गुण थे। इसीलिए उन्हें बुलाया गया था।

सरदार कसापाल ने तेनजिंग को बुलाया। पूछा, 'क्या तुम प्रो. तुक्की के दल में जाओगे?' कहावत है, 'अंधा क्या चाहे? दो आंखें' तेनजिंग तो स्वयं जाना चाहते थे। वे तुरंत तैयार हो गए। एक दिन वे गंगतोक रवाना हो गए। गंगतोक – सिक्किम की राजधानी।

वहाँ तेनजिंग की प्रो. तुक्की से भेंट हुई। उन्होंने देखा, शेरपा उनसे बेहद डरते हैं। कुछ नाराज भी हैं। उनकी शिकायत थी- 'साहब बहुत ज्यादा काम लेता है।'

प्रो. तुक्की ने तेनजिंग को यों ही शामिल नहीं कर लिया। उन्होंने उनकी परीक्षा ली। तिब्बत, नेपाली, हिन्दुस्तानी, अंग्रेजी, सभी भाषाओं में कुछ सवाल पूछे। तेनजिंग ने सभी प्रश्नों के उत्तर दिए। प्रो. तुक्की उनके उत्तरों से प्रसन्न हो गए। उन्होंने तेनजिंग को दल में रख लिया।

कंचनजंगा: पाँच कोषों का महान हिम

गंगतोक में यात्रा की तैयारियाँ की जाने लगीं। फिर एक दिन यात्री–दल चल पड़ा। उसमें तीन इटली निवासी थे। एक शेरपा था। वह रसोई बनाता था। एक मंगोली लामा भी था। वह दार्जिलिंग से ल्हासा जा रहा था। इनके अलावा कई पोर्टर भी थे। प्रो. तुक्की के पास बहुत सारा सामान था। पेटियाँ थीं। बंदूकें थीं। पेटियों में उपहार भरे हुए थे। कुछ पेटियाँ खाली थीं। उसमें प्रो. तुक्की एकत्र की गईं वस्तुएँ रखते। उन्हें वे प्राणों से भी अधिक चाहते थे।

प्रो. तुक्की तेनजिंग को पसंद करने लगे थे। उन्होंने उन्हें सारे सामान का इन्चार्ज बना दिया। अपनी निजी पेटियों की भी चाबियाँ दे दीं। राह में खर्च के लिए काफी पैसा भी दिया। तेनजिंग भी उनका आदर करने लगे।

इस यात्रा में तेनजिंग को पैदल नहीं चलना पड़ा। उन्हें एक सवारी दी गई। पहाड़ी रास्ता। कहीं ऊँचा–कहीं नीचा। फिर सफर भी अजीब। कुछ पता नहीं, कहाँ जाएँगे, कब रुकेंगे, फिर कब चल पडेंगे। इसका एक कारण था। प्रो. तुक्की ज्ञान की यात्रा पर निकले थे। वे तिब्बत का चप्पा–चप्पा जानते थे। उन्हें मालूम था, कोई चीज़ कहाँ मिलेगी। बस, चलते–चलते उन्हें कोई बात सूझती, फिर वे यात्रा की दिशा बदल देते।

प्रो. तुक्की विद्वान व्यक्ति थे। कई भाषाओं के जानकार। तेनजिंग ने गिनती नहीं की कि वे कितनी भाषाएँ जानते हैं। वे तेनजिंग से एक भाषा में बात शुरू करते। फिर एकाएक दूसरी भाषा बोलना शुरू कर देते।... उनसे तेनजिंग ने बहुत–सी बातें सीखीं। तेनजिंग को ऐसा लगता था, यात्रा के साथ–साथ वे स्कूल में भी जा रहे हैं। तेनजिंग ने पहली बार अनुभव किया- बौद्ध मठ, मात्र निवास–स्थान नहीं है। वे पांडुलिपियों और कलात्मक

वस्तुओं के भंडार भी हैं। हर वस्तु का एक अर्थ होता है। एक इतिहास होता है।

तेनजिंग को भी इस यात्रा में कई नई बातें मालूम हुईं जैसे– कंचनजंगा नाम- चार तिब्बती अक्षरों से मिलकर बना है। कांग अर्थात हिम, बर्फ। चेन अर्थात महान, जोर अर्थात कोष – खजाना। और नग यानि पाँच। अतः हम ठीक–ठीक उच्चारण करें तो नाम होगा- कांग – चेन – जोर – नग। अर्थात- 'पाँच कोषों सहित महान हिम'। यहाँ पाँच कोषों का अर्थ है पाँच शिखर। इन कोषों के नाम भी हैं। जैसे- त्सा = नमक, सेर चांग – मी = स्वर्ग, धाम, चोप धांग नार = पवित्र पुस्तकें और धन। मत्सन = शस्त्र और तो चोग धांग = फसल और ओषधियाँ। तब से तेनजिंग कभी नहीं भूल पाए कि उनके पर्वत मात्र हिम और बर्फ की वस्तुएँ नहीं हैं। उनका भी इतिहास है।

धीरे–धीरे कंचनजंगा पीछे छूट गया। यात्रा–दल ने तिब्बत की ऊँची सीमा पार की। तेनजिंग के लिए वह इलाका नया था। हर चीज़ उन्हें आकर्षित कर रही थी। बीस दिन बाद वे ल्हासा पहुँचे। वहाँ उन सब का स्वागत–सत्कार हुआ। तेनजिंग तिब्बती बोलते थे। लोगों को ताज्जुब होता। तेनजिंग उनसे बताते, "मैं शेरपा हूँ।" फिर वे उनसे कई सवाल करते। एक बार एक स्वागत समारोह था। उसमें तेनजिंग से पूछा गया, "क्या चोमो–लुंगमा पर चढ़ा जा सकेगा?"

'मुनष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं। यदि वह कोशिश करे तो अवश्य सफल हो जाएगा।' तेनजिंग ने उत्तर दिया।

'क्या इस पर चढ़ने में डर नहीं लगता? वह तो देवों और दानवों का निवास स्थान हैं।'

"मैं मरने से नहीं डरता। सड़क पर दुर्घटना में भी आदमी मर सकता है। पर्वतों से मैं क्यों डरूं?"

ल्हासा में तेनजिंग दलाई लामा से भी मिले। वहाँ उन्हें कोई

दलाई लामा नहीं कहता। उन्हें 'ग्यालवा रिम्पोछे' कहा जाता है। ग्यालवा का अर्थ है वह, जिसने विजय प्राप्त कर ली है, जो स्वामी है। दूसरे शब्दों में बुद्ध ईश्वर। रिम्पोछे का अर्थ है मूल्यवान, पवित्र।

प्रो. तुक्की ने कई पांडुलिपियाँ एकत्र कीं। ये सब दुर्लभ थीं। फिर वे ल्हासा से चल पड़े। तेनजिंग बेहद प्रसन्न थे। वे पवित्र भूमि तक पहुँच चुके थे। उन्होंने ग्यालवा रिम्पोछे के दर्शन किए थे। उनसे बात की थी। इस यात्रा में कई घटनाएँ घटीं। अंत में वह यात्रा सफल भी रही।

प्रो. तुक्की एक पांडुलिपि की खोज में गए थे। वह संस्कृत में लिखी गई थी। दो हजार वर्ष पुरानी थी। उसे भोजपत्र पर लिखा गया था। विद्वानों का विश्वास था कि पांडुलिपि है पर उसे कोई खोज नहीं पाया। प्रो. तुक्की उसे ही खोजने आए थे। तिब्बत में धंगा नाम का मठ है। प्रो. तुक्की का विश्वास था, पांडुलिपि वहीं है। अतः सब धंगा गए। पर उसे खोजना आसान नहीं था। लामाओं को उसकी कोई जानकारी नहीं थी। फिर मठ में हजारों पांडुलिपियाँ थीं। प्रो. तुक्की निराश नहीं हुए। वे उस पांडुलिपि को खोजते रहे। पर वह नहीं मिली।

एक सुबह की बात है। तेनजिंग ने देखा, प्रो. तुक्की की कमीज बाहर है। तेनजिंग ने उनका ध्यान आकर्षित कराया। वे बोले, "मेरे लिए यह सौभाग्य सूचक चिह्न है। शायद वह पांडुलिपि हमें आज ही मिल जाए।" और सचमुच, वह उन्हें उस दिन मिल गई। भाग्य की बात। पांडुलिपि तेनजिंग को ही मिली। वहाँ ढेर सारी पांडुलिपियाँ थीं। वह उन्हीं के नीचे दबी पड़ी थी। प्रो. तुक्की ने तेनजिंग को उसके बारे में काफी जानकारी दी थी। उसे देखते ही तेनजिंग जान गए, यही पांडुलिपि है। तेनजिंग उसे उनके पास ले गए। उसे देखते ही प्रो. तुक्की खुशी से उछल पड़े।

प्रो. तुक्की ने अब लामाओं से बात की। कहा, 'वे चाहें

जितना धन ले लें, पांडुलिपि उन्हें दे दें।' पर लामा पैसे लेने को तैयार नहीं थे। उनका कहना था, ज्ञान बेचा नहीं जाता। जिसे उसकी चाह है, उसे तो वह निःशुल्क मिलना चाहिए। लामाओं ने कहा, वे पांडुलिपि इटली ले जाएँ। उसकी प्रतिलिपियाँ करा लें। फिर मूल पांडुलिपि उनके पास भेज दें।

प्रो. तुक्की इस प्रस्ताव पर राजी हो गए। उन्होंने मठ में पाँच सौ रुपये चढ़ाए। लामाओं को धन्दवाद दिया। फिर लौट पड़े। वे अपने लक्ष्य को पाने में सफल हुए थे। प्रयत्नों से सफलता मिलती ही है। भले देर से मिले।

एवरेस्ट की ओर-एक नई दिशा से

तेनजिंग कई स्थानों की यात्रा कर चुके थे। कई शिविरों पर चढ़े थे। पर उनका एक सपना अभी पूरा नहीं हुआ था। यह सपना था- चोमो—लुंगमा तक पहुँचने का। चौदह वर्ष पहले वे उस पर चढ़े थे। तब उन्होंने टाइगर का खिताब जीता था। कभी—कभी वे सोचते, अचरज करते- 'क्या वे कभी वहाँ पहुँच पाएँगे। या देवता उन्हें इस प्रिय पर्वत से दूर ही रखेंगे?'

पर देवता उन पर कृपालु थे। वे तीस वर्ष के हो रहे थे। शीघ्र ही उन्हें एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होने वाली थी। यह उपलब्धि क्या थी? यह थी, एक बार फिर एवरेस्ट की यात्रा। इस बार यात्रा का मार्ग नया था। इस बार नेपाल की ओर से उस पर जाना था। अर्थात दक्षिण से उत्तर की ओर।

सन् 1952—

एवरेस्ट के लिए एक नया अभियान शुरू हुआ। इस अभियान दल के नेता थे- डॉ. वापस डू नंत। तेनजिंग उनसे मिल चुके थे। एक और पर्वतारोही थे। नाम था- रेमंड लैम्बर्ट। लोग प्यार से उन्हें 'भालू' कहते थे। वे आलपस पर्वत पर चढ़ाई किया

करते थे। इसी कारण, एक बार बर्फ से उनके पैरों की अंगुलियाँ गल गईं थीं। पर लेम्बर्ट हिम्मती थे। वे अपने छोटे–छोटे पैरों के सहारे ही एवरेस्ट पर चढ़ना चाहते थे।

यात्रा शुरू हुई।

एक दिन वे एवरेस्ट की तलहटी में पहुँच गए। आधार शिविर बनाया गया। फिर नए–नए शिविर बनाने का काम शुरू हुआ। पर्वतारोही आगे बढ़ते गए। तेनजिंग लैम्बर्ट के साथ थे। उनके पीछे एक और टीम थी। उसमें डिट्रेल नामक पर्वतारोही था।

तेनजिंग और लैम्बर्ट आगे–आगे थे। धीरे–धीरे वे एवरेस्ट के दक्षिणी शिखर के पास तक पहुँच गए। पर असली शिखर तो दूर था। फिर भी वे 28,250 फुट की ऊँचाई तक पहुँच गए थे।

पहली बार मनुष्य इतनी ऊँचाई तक पहुँचा था। पर एवरेस्ट तो अभी दूर था। लेकिन अब आगे बढ़ना कठिन था। आगे बढ़ना तो संभव था, पर लौटना कठिन। क्या किया जाए?

आगे बढ़ा जाए। या नीचे लौटा जाए। तेनजिंग और लैम्बर्ट विचार करते रहे। उन्होंने देखा, शिखर तक पहुँचना कठिन है। आगे बढ़ने का अर्थ है- मृत्यु। निराश हो वे नीचे उतरने लगे। मन भारी हो गया। लेकिन उन्हें एक विश्वास था। शायद अगले प्रयत्न में वे शिखर तक पहुँच जाएँ।

एवरेस्ट सातवीं यात्रा

सन् 1953!

एवरेस्ट पर एक नए अभियान की तैयारी। इस बार दल के नेता थे- कर्नल हंट। उसमें एडमंड हिलेरी भी थे। तेनजिंग को भी चलने का निमंत्रण मिला। वे तो तैयार ही बैठे थे।

एक बार फिर यात्रा शुरू हुई। इस बार अभियान–दल काफी बड़ा था। दार्जिलिंग से काठमांडू। काठमांडू से नामचे बाजार। फिर चढ़ाई। एक दिन अभियान–दल थ्यांगबोचे मठ पहुँच गया। वहाँ वे कुछ दिन रहे। उद्देश्य था– वहाँ की जलवायु के अभ्यस्त हो जाएँ।

इसी बीच कर्नल हंट शिखर पर अभियान की योजना बना रहे थे। उन्होंने तेनजिंग से एक वायदा किया था। यदि उनका स्वास्थ्य और शारीरिक स्थिति अच्छी रही तो उन्हें शिखर पर चढ़ने का अवसर दिया जाएगा। डाक्टरी जांच हुई। तेनजिंग सबसे अधिक 'फिट' पाए गए। शिखर पर दो अभियान किए जाने थे। इसके लिए दो दल बनाए गए थे। एक में थे हिलेरी और तेनजिंग। दूसरे में डॉ. ईवान्स और बोरडिलन।

अन्य शेरपाओं को यह मालूम हुआ। उन्होंने तेनजिंग से कहा कि वे पागल हो गए हैं। हो सकता है, अभियान के दौरान उनकी मृत्यु हो जाए। तब वे उनकी पत्नी को किस तरह मुँह दिखाएंगे? उनकी और भी शंकाएँ थीं। उनका कहना था कि एवरेस्ट विजय के बाद अभियान बंद हो जाएंगे। तब उनकी रोजी–रोटी मारी जाएगी। लेकिन तेनजिंग ने सब को संतुष्ट किया।

अब तेनजिंग हिलेरी के साथ ही रहते। वे कम से कम बोझ उठाते। आधार शिविर और पश्चिमी क्वम के बीच आते जाते। ऑक्सीजन के उपकरणों का अभ्यास करते। नौसिखिये शेरपाओं को सपाट ढलान वाले मार्ग में सहायता पहुँचाते।

तेनजिंग और हिलेरी एक दूसरे को अच्छी तरह समझने लगे थे।

एक दिन की बात है। वे दोनों शिविर दो से शिविर एक की ओर आ रहे थे। वे आपस में रस्सी से बंधे हुए थे। हिलेरी आगे, तेनजिंग पीछे। वे लोग बर्फ की ऊँची–ऊँची दीवारों के मध्य अपना मार्ग बना रहे थे। सहसा हिलेरी के पैरों के नीचे की बर्फ खिसक गई और वे एक दरार में गिर पड़े।

'तेनजिंग–तेनजिंग' उन्होंने पुकारा।

सौभाग्य से दोनों के बीच ज्यादा बड़ी रस्सी नहीं थी। फिर तेनजिंग ऐसी किसी दुर्घटना के प्रति सतर्क भी थे। उन्होंने फौरन कुल्हाड़ी बर्फ में गाड़ी और स्वयं उसकी बगल में लेटकर उन्हें गिरने से रोकने लगे। वे पन्द्रह फुट नीचे जा गिरे थे। धीरे–धीरे उन्होंने उन्हें ऊपर खींच लिया। जब तक वे ऊपर आए, तेनजिंग के दस्ताने तार–तार हो चुके थे, पर हाथ सही सलामत थे। हाँ, यहाँ–वहाँ खरोचें लग गई थीं। हिलेरी को कोई चोट नहीं पहुँची थी। वे बोले, "शाबाश तेनजिंग, बहुत अच्छा किया।"

बाद में शिविर में जाकर हिलेरी ने और लोगों को बताया कि यदि आज तेनजिंग नहीं होता तो मैं कहीं का नहीं रहता।

निरंतर कामः सफलता का एक सूत्र

एवरेस्ट में क्वम नाम की जगह है। यह आइरिश नाम है। यह नाम मेलोरी ने रखा था। क्वम में कई शिविर लगाए गए। तीसरा, चौथा, पाँचवाँ। एक वर्ष पहले स्विस लोगों ने भी यहीं

शिविर लगाए थे। तब लौटते वक्त स्विस लोग शिविर में काफी सामान छोड़ गए थे। इसमें खाद्य सामग्री थी। तेनजिंग को यह पता था। उन्होंने बर्फ खोद कर यह सारी सामग्री निकाल ली।

इधर हिलेरी और तेनजिंग क्वम में व्यस्त थे। उधर दूसरे लोग साउथ कोल तक मार्ग बनाने में जुटे थे। इस काम में तीन सप्ताह का समय लगा। ऊँचाई पर कुछ लोगों की तबीयत बिगड़ जाती है। उस समय भी दो लोगों की तबीयत बिगड़ गई। दोनों को नीचे आना पड़ा। ये दोनों युवा पर्वतारोही थे। पर्वतों पर नए युवा लोगों को, अनुभवी पुराने लोगों की बनिस्बत ज्यादा तकलीफ होती है।

एवरेस्ट पर सभी को तकलीफ होती है। थकान, ठण्ड के कारण जमने का भय, हवा की कमी की तकलीफ। सिरदर्द भी होता है। गले में खराश हो जाती है। ऊँचाई पर नींद भी नहीं आती। अंग्रेज पर्वतारोही नींद की गोलियाँ खाकर सोते थे। पर तेनजिंग ने कभी उनका उपयोग नहीं किया। वे जितनी ऊँचाई पर जाते थे, उतना उन्हें अच्छा लगता था। उनकी सफलता का एक राज था। वे हमेशा स्वयं को व्यस्त रखते थे। इस कारण वे हमेशा स्वस्थ और तरोताजा रहते थे। वे सामान की देखभाल करते, तम्बू में चीजें करीने से रखते। बर्फ गरम कर पानी तैयार करते। और जब कोई काम नहीं होता तो बर्फ या चट्टान पर हाथ–पांव फटकारते। उद्देश्य यही था- व्यस्त रहो। ताकि रक्त संचार बना रहे। कमजोरी न आने पाए।

बहुत ऊँचाई पर भूख भी नहीं लगती। जबरन भोजन करना पड़ता है। हवा की कमी के कारण प्यास भी ज्यादा लगती है। तेनजिंग कहते थे कि ऐसे समय बर्फ खाना या ठंडा पानी पीना बुरा होता है। इससे गला और सूख जाता है। खराश हो जाती है। पर 1953 के अभियान में एक अच्छी बात थी। नींबू का सूखा चूरा बहुत था। वे इसी को पीते थे।

उधर लोतसे शिखर पर काम जारी था। साउथ कोल के मार्ग पर शिविर छह और सात लगा दिए गए थे। कभी—कभी अंधड़ आता और काम बंद कर देना पड़ता। कभी गलत काम हो जाते। फिर भी काम जारी रहा। 20 मई को अग्रिम दस्ता साउथ कोल पर पहुँच गया। इस दस्ते में बिलफ्रेड नोयस और 16 शेरपा थे। अगले दिन उन्हें और ऊपर जाना था। क्वम में मौजूद लोग दूरबीन की सहायता से उन्हें देख रहे थे। उन्होंने देखा, केवल दो लोग जा रहे थे। वे सब चिंता में पड़ गए। कहीं कोई गड़बड़ थी।

कर्नल हंट नहीं चाहते थे कि शिखर पर जाने वाले लोग गड़बडी का पता लगाने जाएँ। कारण, वे थक जाते। पर किसी न किसी को तो जाना ही था। अंत में हिलेरी और तेनजिंग जाने के लिए तैयार हुए। तेनजिंग ने कहा, "यदि शेरपाओं को कोई तकलीफ है तो मुझे ही जाना चाहिए। मैं उनसे बात करूँगा। उन्हें आगे भेजूँगा।"

शीघ्र ही वे दोनों चल पड़े। धीरे—धीरे वे लोत्से पर स्थापित शिविर सात में पहुँचे। तब तक दोपहर हो गई थी। वहाँ पहुँचने पर पता चला कि शेरपाओं को थोड़ी बहुत तकलीफ तो है, पर वे बीमार नहीं हैं। असल में वे पहाड़ों पर ऊपर जाने से डर रहे थे। तेनजिंग ने उन्हें समझाया तो वे अगले दिन जाने के लिए तैयार हो गए। दूसरे दिन यात्रा शुरू हुई। यह तय किया गया कि तेनजिंग और हिलेरी शिविर सात के आगे नहीं जाएँगे। पर वे दोनों चाहते थे कि जब यहाँ तक आ ही गए हैं, तब काम भी पूरा हो जाए। वे शेरपाओं को लेकर कोल तक गए और फिर उसी दिन शिविर चार पर लौट आए। तीस घंटों में उन्होंने पाँच हजार फुट की चढ़ाई—उतराई की। वे थक चुके थे, पर बिलकुल टूटे नहीं थे। थोड़े विश्राम के बाद वे फिर ठीक हो गये।

शिखर पर चढ़ने की अंतिम लड़ाई

अब शिखर पर चढ़ने की अंतिम लड़ाई बाकी थी। योजना थी कि कर्नल हंट और शेरपाओं के साथ बोरडिलन और ईवान्स पहले कोल पर जाएँगे। एक दिन बाद तेनजिंग और हिलेरी। यदि बोरडिलन और इवान्स असफल होते तो ये लोग जाते।

23 मई को बोरडिलन और ईवान्स का दल रवाना हुआ और 25 मई को तेनजिंग और हिलेरी का दल।

तेनजिंग ने अपनी कुल्हाड़ी पर चार ध्वज लपेट रखे थे। इनमें दो तो ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र संघ के थे, एक नेपाल का और एक भारतीय। नेपाली ध्वज काठमांडू में दिया गया था और भारतीय ध्वज दार्जिलिंग में तेनजिंग के एक अभिन्न मित्र ने दिया था। बोरडिलन और ईवान्स के पास भी ध्वज थे।

शिविर सात में उन्होंने फिर रात बिताई। सुबह आसमान साफ था। वे फिर रवाना हुए। उन्होंने दक्षिण शिविर के पीछे दो बिन्दु देखे। वे बोरडिलन और ईवान्स थे। इसके बाद वे नजरों से ओझल हो गए।

उधर तेनजिंग और हिलेरी पर्वत पर चढ़ाई करने लगे। जब वे शिविर आठ पर पहुँचे तो उन्हें वहाँ केवल शेरपा अंग तेनजिंग मिला। वे उसे 'भालू' कहते थे। उसकी तबीयत खराब हो गई थी। उसने बताया कि बोरडिलन और ईवान्स जहाँ तक जा पाएँगे, कर्नल हंट तथा शेरपा दा नाम ग्याला सबसे ऊँचे शिविर तक रसद और सामान पहुँचाएंगे। ताकि जरूरत पड़ने पर तेनजिंग और हिलेरी उसका उपयोग कर सकें।

तेनजिंग और हिलेरी कोल पहुँचे। उन्होंने देखा कि कर्नल हंट और दा नाम ग्याला दक्षिण पूर्व पहाड़ी से नीचे आ रहे हैं। वे बेहद थके हुए थे। थोड़ी देर के लिए कर्नल साहब गिर पड़े। तेनजिंग ने उन्हें नींबू पानी पिलाया। फिर एक तंबू में ले गए।

उन्होंने बताया कि वे 27,350 फुट तक पहुँच सके थे। एक वर्ष पहले तेनजिंग और लेम्बर्ट जहाँ तक पहुँचे थे, उससे वह दो सौ फुट ज्यादा था। वे 28 हजार फुट तक जाना चाहते थे, पर नहीं जा पाए। इसीलिए उन्होंने शिविर नौ पर सामान छोड़ दिया था। इनमें उनके ऑक्सीजन टैंक भी थे। वे बिना उसकी सहायता के नीचे आए थे, इसीलिए थक भी गए थे। अब वे सब बोरडिलन और ईवान्स की प्रतीक्षा करने लगे।

कर्नल हंट ने कहा, "यदि दोनों शिखर पर चढ़ जाएँ तो अच्छा होगा क्योंकि रानी का राज्यारोहण होनेवाला है।" एक पल के लिए तेनजिंग ने सोचा, 'तो इसीलिए पहले दोनों अंग्रेज गए।' पर दूसरे ही क्षण उन्होंने सोचा, 'यह मूर्खतापूर्ण विचार है।' यहाँ कोई प्रथम या द्वितीय नहीं होता। यहाँ केवल एवरेस्ट है और किसी न किसी को उस पर चढ़ना चाहिए। हिलेरी और मेरे लिए सामान पहुँचाने में हंट ने तो प्रायः अपनी जान दे दी थी।' बाद में हंट आदि नीचे चले गए।

कोल में भयानक ठंड थी। हवा भी तेज थी। तेनजिंग के शब्दों में – "हमारे साथ कोल पर अब केवल तीन शेरपा थे – अंगचिमा, अंगतेम्बा और पेम्बा।

वे सब प्रतीक्षा करते रहे। दोपहर में उन्हें ढलान पर दो आकृतियाँ नजर आईं। तेनजिंग ने सोचा, 'शायद वे शिखर पर नहीं चढ़ पाए। पर कुछ कहना कठिन था। तेनजिंग और दा नामग्याला उनसे मिलने आगे बढ़े। वे बेहद थक गए थे। उन्होंने बताया, वे शिखर पर नहीं चढ़ पाए। वे उससे कुछ सौ फुट नीचे तक ही पहुँच पाए थे। उससे आगे वे नहीं जा सकते थे। ताकत नहीं थी। वे जाते तो शायद फिर लौट नहीं पाते। रात हो जाती और उसके साथ ही मौत भी। वे इस बात को जानते थे, इसीलिए लौट आए।

ईवान्स ने कहा, 'तेनजिंग, मुझे विश्वास है तुम और हिलेरी शिखर तक अवश्य पहुँचोगे। पर चढ़ाई कठिन है। सबसे ऊँचे शिविर से ऊपर जाने में चार–पाँच घण्टे लगेंगे। चढ़ाई खतरनाक भी है, सावधान रहना। यदि मौसम ठीक रहा तो तुम अवश्य चढ़ पाओगे। तब अगले वर्ष तुम्हें चढ़ना नहीं पड़ेगा।'

तेनजिंग और हिलेरी ने उनसे कई सवाल पूछे। ईवान्स और बोरडिलन ने उनके उत्तर दिए। उन्होंने उन्हें उचित सलाह भी दी। पहाड़ों पर इसी तरह की पारस्परिक सहायता जरूरी होती है। इसी तरह आपसी सहयोग की भावना मनुष्य को महान बनाती है। यदि वे लोग न होते, तेनजिंग और हिलेरी क्या सफल हो पाते! वह रात उन लोगों ने कोल पर बिताई। वे कुल दस लोग थे।

खराब मौसम : सफलता की शुभ कामना

सुबह हुई तो मौसम खराब था। हवा तेज चल रही थी। मानो हजारों चीते एक साथ गुर्रा रहे हों। वे सब उसके थमने की प्रतीक्षा करने लगे। दोपहर तक हवा बंद हो गई। बोरडिलन और ईवान्स नीचे जाने की तैयारी करने लगे।

'गुड लक' कहकर ईवान्स अपने साथियों के साथ नीचे चल पड़े।

अब शिविर आठ पर छह लोग बच गए-लोबे, ग्रगोरी और अंग न्यिमा पेम्बरू, हिलेरी और तेनजिंग।

रात हुई, मौसम अभी भी बहुत खराब था। साहबों ने नींद की गोली खाई।

तेनजिंग बताते हैं- ''मैं अंधकार में पड़ा, हवा की आवाज सुनता रहा। सोचता रहा, हवा बंद होनी चाहिए। ताकि हम कल ऊपर जा सकें। मैं सात बार एवरेस्ट आ चुका हूँ। मैं एवरेस्ट को

प्यार करता हूँ। पर सात प्रयत्न पर्याप्त हैं। यहाँ से हमें अवश्य शिखर पर पहुँचना चाहिए। इस बार अवश्य। इसी वक्त अवश्य। घंटा बीता, फिर दूसरा, धीरे–धीरे झपकी लगने लगी। फिर नींद खुली। फिर झपकी लगी। अर्ध निंद्रा की अवस्था। अंधकार में मेरा दिमाग यहाँ–वहाँ भटकने लगा। एवरेस्ट पर कितने लोगों के प्राण गए। किसी युद्ध भूमि की भांति। पर एक दिन मनुष्य को विजयी होना ही है।और जब वह विजयी होगा, तब...। अचानक मुझे प्रो. तुक्की की याद आ गई। उन्होंने मुझसे कहा था कि वे मुझे पंडित नेहरू से मिलवाएँगे। यदि मैं शिखर पर चढ़ने में सफल हुआ तो शायद वह संभव हो जाएगा।

फिर मुझे सोलो खुम्बू, अपने पुराने घर तथा माता–पिता की याद आई। मुझे ईश्वर के प्रति उनका विश्वास याद आया। मेरे लिए की गई प्रार्थनाएँ याद आईं। फिर मैं स्वयं प्रार्थना करने लगा– ईश्वर की प्रार्थना, एवरेस्ट की प्रार्थना। फिर मैंने विचार करना छोड़ दिया, मैं सपना देखने लगा। मैंने देखा, चारागाह में याक चर रहे हैं, फिर एक सफेद घोड़ा मुझे नजर आया। शेरपाओं का विश्वास है कि स्वप्न में पशुओं का दिखाई देना शुभ होता है। मैंने उनका ही स्वप्न देखा। याकों और घोडों के पीछे एक और सपना था- आकाश में उठता एक धवल सपना।"

28 मई। ठीक एक वर्ष पहले तेनजिंग और स्विस पर्वतारोही लैम्बर्ट ने एवरेस्ट पर चढ़ाई की अंतिम कोशिश की थी। सुबह हुई तो हवा तेज चल रही थी। पर आठ बजे तक हवा बंद हो गई। पेंबा बीमार था, अतः ऊपर नहीं जा सकता था। अब केवल एक शेरपा अंगन्यिमा बच गया था। इसका अर्थ यह था कि शेष लोगों को ज्यादा बोझा ले जाना पड़ेगा। 9 बजे लोबे, ग्रेगोरी और अंगन्यिमा शिविर से निकले। वे चालीस पौंड वजन और ऑक्सीजन–उपकरण ले जा रहे थे। एक घंटे बाद तेनजिंग और हिलेरी रवाना हुए। ये लोग पचास पौंड वजन ले जा रहे थे।

लोबे आदि बर्फ पर सीढ़ियाँ काटने वाले थे। इससे वे और हिलेरी बिना थके आगे बढ़ सकते थे।

वे सब कोल की बर्फीली चट्टानों से आगे बढ़े। धीरे—धीरे वे दक्षिण पूर्वी पहाड़ी की ओर जाने लगे। दोपहर तक तेनजिंग और हिलेरी पहले वाले दल के साथ मिल गये। थोड़ी ऊँचाई पर एक तम्बू के टुकड़े पड़े हुए थे। इन तम्बुओं को पिछले साल तेनजिंग और लैम्बर्ट ने स्थापित किया था।

अब खड़ी चढ़ाई थी, इसलिए वे सब धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। बर्फ जमी थी। इसलिए दुबारा सीढ़ियाँ काटनी पड़ीं। दो बजे तक वे सब बेहद थक गये। तय हुआ कि शिविर के लिए उपयुक्त स्थान खोजा जाए। तेनजिंग को याद था कि यहीं कहीं, उन्होंने और लैम्बर्ट ने शिविर लगाया था। वे उस स्थान को ढूंढ़ने लगे। शीघ्र ही वह स्थान मिल गया। अब लोवे, ग्रेगोरी और अंगन्यिमा कोल के लिए लौट पड़े। तेनजिंग और हिलेरी अकेले रह गये। इस समय वे 24,700 फुट की ऊँचाई पर थे। विश्व का चौथा ऊँचा शिखर लोत्से, जिसे वे रोज देखा करते थे। अब उनके नीचे था। दक्षिण पूर्व में मकालू था। सैंकड़ों मील तक सब—कुछ नीचा ही नीचा नजर आ रहा था। दूर पूर्व में कंचनजंगा की सफेद रिज़ दिखायी दे रही थी।

तेनजिंग और हिलेरी ने शिविर लगाने की तैयारी शुरू की। वह सबसे ऊँचाई पर लगने वाला शिविर था। शाम तक शिविर तैयार हो गया। उन्होंने बर्फ काट कर सोने लायक स्थान बनाया। फिर उन्होंने बर्फ के कारण अकड़ गई रस्सी और केनवास को ठीक कर ऑक्सीजन के सिलेंडर गाड़े। किसी तरह शिविर लगाकर वे उसके बीच घुस गए। हलकी हवा चल रही थी। भीतर ठंड भी ज्यादा नहीं थी। हिलेरी ने ऑक्सीजन सेटों की जाँच की। तेनजिंग ने स्टोव गरम कर काफी और नींबू पानी तैयार किया। इस समय दोनों को बेहद प्यास लग रही थी। उनके पास

फल थे, बिस्कुट थे, सूप था। पर फल बर्फ के कारण जम गए थे और उन्हें स्टोव पर गरम करना पड़ा।

धीरे–धीरे रात घिर आई। समय बीतने लगा। आधी रात को हवा बिलकुल बंद हो गई। 29 मई। ठीक एक वर्ष पहले 29 मई को तेनजिंग और लैम्बर्ट पराजित होकर नीचे लोटे थे।

आखिरी बाधा

सुबह लगभग साढ़े तीन बजे वे जागे। तेनजिंग ने फिर स्टोव जलाया। नींबू पानी के लिए बर्फ पिघलायी। थोड़ा बहुत खाया। हवा बिलकुल बंद थी। थोड़ी ही देर बाद उन्होंने तम्बू का परदा सरकाया। पौ फट रही थी। तेनजिंग ने 16,000 फुट नीचे चमक रहे थ्यांगबोचे मठ की ओर इशारा किया। तेनजिंग ने मन ही मन प्रार्थना की- 'मेरे माता–पिता के ईश्वर – आज मुझ पर कृपा करो।'

पर इस बीच एक गड़बड़ हो गई। हिलेरी ने अपने बूट उतार कर रख दिए थे। वे ठंड में अकड़ गए। किसी तरह उन्हें ठीक किया गया। इस अंतिम चढ़ाई के लिए तेनजिंग ने विभिन्न जगहों की चीजें पहनी थीं। उनके जूते स्विस थे। बंद जैकेट और दूसरी चीजें ब्रिटिश थीं। मोजे अंग लहमू ने बुने थे। स्वेटर हिमालयन क्लब की श्रीमती मेड्रीसन ने दिया था। ऊनी टोप डेनमार्क का था ओर गले में लाल स्कार्फ रेमंड लैम्बर्ट का था।

साढ़े छह बजे वे तम्बू के बाहर निकले। वातावरण शांत, स्वच्छ और हवायुक्त था। 'हमने हाथों में तीन दस्ताने पहने – सिल्क, ऊन और विंडप्रूफ के। जूतों में कैम्पटन कसे और पीठ पर चालीस पौंड का ऑक्सीजन उपकरण था। मेरी कुल्हाड़ी पर चारों ध्वज लिपटे थे। जेब में एक छोटी लाल–नीली पेंसिल थी।

"सब तैयार।" "अच्छा तैयार।" और हम चल पड़े।

चूंकि हिलेरी के जूते सख्त थे, इसलिए उन्होंने तनेजिंग को आगे चलने को कहा।

थोड़ी देर बाद वे उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ से पिछले वर्ष तेनजिंग और लैम्बर्ट लौटे थे। ईवान्स और बोरडिलन उनके लिए दो शीशियाँ ऑक्सीजन की छोड़ आए थे। दोनों ने उन्हें खोजा।

नौ बजे तक वे दक्षिणी शिखर पर थे। ईवान्स और बोरडिलन यहीं तक पहुँचे थे। दस मिनट तक तेनजिंग और हिलेरी ने यहाँ विश्राम किया। अब उन्हें केवल तीन सौ फुट जाना था। पर रास्ता बेहद संकरा और सपाट था। वह खतरनाक भी था। बायीं ओर नीचे शिविर चार के सफेद तम्बू नजर आ रहे थे। दायीं ओर बर्फ की चट्टानें थीं। उन्हें इन्हीं में से गुजरना था।

वे फिर आगे बढ़े।

दक्षिणी शिविर से उन्हें नीचे, फिर ऊपर और ऊपर जाना था। वहाँ बर्फ के खिसकने का खतरा था। यह भी हो सकता था कि उनके बोझ से बर्फ टूट जाती। अतः सावधानी जरूरी थी। मौसम अच्छा था। वे थके भी नहीं थे। धीरे–धीरे वे आगे बढ़ते गए।

अब शिखर और उनके बीच एक आखिरी बाधा थी। यहाँ एक सीधी चट्टान रास्ता रोके खड़ी थी।

सपना पूरा हुआ

रास्ता खोजने हिलेरी आगे बढ़े। इसमें उन्हें पीछे की ओर पैरों पर झुकना पड़ता और तेनजिंग को नीचे से उन्हें सहारा देना पड़ता। किसी तरह हिलेरी उस चट्टान पर चढ़ गए। फिर उनकी रस्सी के सहारे तेनजिंग भी उस पर चढ़ गए।

यहाँ उन्होंने थोड़ी देर फिर विश्राम किया। कुछ देर बाद वे फिर आगे बढ़े। आगे चलने पर उन्हें एक नंगी चट्टान दिखाई दी। यहाँ तेनजिंग ने दो पत्थर उठाकर जेब में रख लिए। तीन फुट चलकर वे फिर रुके और सामने देखा। फिर वे चल पड़े। शिखर के नीचे पहुँच कर दोनों रुक गए। दोनों के बीच तीस फुट रस्सी थी। तेनजिंग ने उसे लपेट रखा था और दोनों के मध्य छह फुट का फासला था।

उस समय का अनुभव तेनजिंग बताते हैं-

''मैं उस समय 'पहले' और 'दूसरे' के बारे में विचार नहीं कर रहा था। मैंने यह नहीं सोचा कि वहाँ सोने का सेब है और हिलेरी को धक्का देकर उसे लपकने पहुँचूं। हम धीरे--धीरे आगे बढ़े और अगले क्षण शिखर पर थे। पहले हिलेरी पहुँचे, और फिर मैं।''

शिखर पर पहुँचते ही दोनों ने हाथ मिलाया। तेनजिंग ने हवा में हाथ हिलाकर हिलेरी को आलिंगन में ले लिया। वे दोनों मारे खुशी के कूदने लगे। इस समय दिन के 11 बजकर 30 मिनट हुए थे। आकाश गहरा नीला था। सूरज तेजी से चमक रहा था। तिब्बत की ओर से हवा हलके–हलके बह रही थी। उन लोगों ने ऑक्सीजन बदं कर दी। शिखर कर उसके बिना रहा जा सकता है।

हिलेरी ने कैमरा निकाला। तेनजिंग ने अपनी कुल्हाड़ी ऊपर की। उस पर ध्वज लिपटे हुए थे। तेनजिंग ने हिलेरी से कहा कि अब मैं आपका फोटो ले लूं, पर हिलेरी ने इनकार कर दिया। हिलेरी चारों ओर के चित्र लेने लगे।

इसी बीच तेनजिंग ने अपनी जेब से मिठाइयाँ निकालीं। बेटी नीमा द्वारा दी गई पेंसिल भी निकाली और फिर बर्फ को खोद कर ये चीजें उसमें गाड़ दीं। हिलेरी ने उन्हें कपड़े की एक बिल्ली

दी। यह अभियान का प्रतीक चिह्न थी। तेनजिंग ने उसे भी गाड़ दिया।

तेनजिंग कहते हैं-

"मैंने सोचा, घर पर हम अपने प्रियजन को मिठाई देते हैं। एवरेस्ट भी मुझे हमेशा प्रिय रहा है। और आज तो बेहद पास भी हैं।"

मैंने भेंट चढ़ाकर उन्हें बर्फ से ढंक दिया। फिर प्रार्थना करने लगा। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। मुझे अपने सपनों के पर्वत पर सात बार आना पड़ा। और इस सातवीं बार ईश्वर की कृपा से मेरा वह सपना पूरा हुआ।

चोमो-लुंगमा मैं आभारी हूँ...

शिखर पर हम पन्द्रह मिनट रहे। अब वापस लौटना था। वापसी के लिए कुल्हाड़ी की जरूरत पड़ती, अतः मैंने ध्वजाओं को शिखर पर फैला दिया और रस्सी के दोनों छोरों को बर्फ में अच्छी तरह दबा दिया।

अब वे नीचे की ओर लौट पड़े। पर नीचे आने में भी बेहद सावधानी की जरूरत थी। वे थके हुए थे और पर्वतों पर अक्सर बेहद थकान के दौरान जरा-सी लापरवाही बरतने से दुर्घटना हो जाती है। एक घंटे बाद वे दक्षिणी शिखर पर पहुँच गए। पहले हिलेरी, उनके पीछे तेनजिंग। वे थके तो थे पर बुरी तरह नहीं। इस समय सबसे बड़ी समस्या प्यास और पानी की थी, कारण फलास्क का पानी जम चुका था।

दक्षिण शिखर पर कुछ देर विश्राम करने के बाद वे पुनः नीचे आए। उतरना चढ़ने से ज्यादा खतरनाक था।

धीरे-धीरे वे खतरनाक रास्ता पार कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचे। वहाँ उन्हें बोरडिलन और ईवान्स द्वारा छोड़ी गई ऑक्सीजन की दो बोतलें मिल गईं। यह अच्छा हुआ क्योंकि उनकी ऑक्सीजन समाप्त हो रही थी।

दो बजे वे सबसे ऊँचाई पर स्थित शिविर पर पहुँचे। वहाँ तेनजिंग ने पानी गरम कर लेमनजूस तैयार किया।

वे फिर नीचे उतरने लगे।

व्यर्थ के विवाद

2 जून, 1953

आज से चौंतीस वर्ष पहले का समय। तब हम लोग कॉलेज के छात्र थे। उन दिनों समाचार पत्रों में कुछ खबरें रोज छपती थीं। ये खबरें इंग्लैंड की राजकुमारी एलिजाबेथ द्वितीय के राज्यारोहण से संबंधित होतीं। इन्हीं खबरों के बीच एक सनसनीखेज खबर छपी। सभी समाचार पत्रों में बड़े-बड़े शीर्षक।

''एवरेस्ट पराजित।''

''एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोरगे शिखर पर चढ़ने में सफल'' यह एक ऐतिहासिक खबर थी।

सारा संसार रोमांचित हो उठा था। इस खबर से हम लोग भी रोमांचित हो उठे थे।

अंततः एवरेस्ट पर मनुष्य पहुँच ही गया था। मनुष्य की एवरेस्ट-विजय ने हम सबको एक सीख भी दी थी। मनुष्य चाहे तो क्या नहीं कर सकता। ईमानदारी से किए गए प्रयत्न सफल होते ही हैं, भले ही पहले असफलताएं मिलें।

पर एवरेस्ट-विजय का यह समाचार विवादों से भी भरा था। कुछ लोगों का यह ख्याल था कि यह खबर सच नहीं है। एलिजाबेथ द्वितीय की ताजपोशी के लिए जानबूझ कर गढ़ी गई है। ऐसा बोलने के लिए एक कारण भी था। एक दिन पहले ही यह समाचार छपा था कि एवरेस्ट-विजय का प्रयत्न असफल रहा है।

तेनजिंग ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, "हमारी सफलता का समाचार जानबूझ कर विलंब से दिया गया। उसे दो जून, ताजपोशी के दिन, ब्रिटेन में प्रसारित किया जाना था।" एवरेस्ट विजय का समाचार एक गोपनीय संदेश के जरिये भेजा गया था। पर्वतारोहण दल के नेता कर्नल हंट ने एक धावक को नामचे बाजार भेजा। वहाँ से वह बेतार के जरिए नेपाल में ब्रिटिश राजदूत को भेजा गया।

ब्रिटिश राजदूत ने यह समाचार गुप्त रखा। यहाँ तक कि नेपाल-नरेश को भी नहीं बताया। इसके बाद एक और विवाद उत्पन्न हुआ। यह तेनजिंग की नागरिकता को लेकर था। नेपाल के अखबार उन्हें अपना नागरिक घोषित कर रहे थे। भारतीय अखबार उन्हें "भारतीय" बता रहे थे।

इन सब बातों से तेनजिंग परेशान भी हुए। वे एक सीधे-सादे इन्सान थे। उन्होंने सादगी से कहा, "मैं नेपाल में जन्मा। भारत में पला बढ़ा।"

हमारी राय में यह विवाद व्यर्थ था। तेनजिंग की विजय किसी व्यक्ति, किसी देश की नहीं थी। यह मनुष्य मात्र के साहस की विजय थी।

इसी बीच एक और विवाद छिड़ा। एवरेस्ट पर पहले कौन पहुँचा?

हिलेरी या तेनजिंग?

यह विवाद भी व्यर्थ था।

एवरेस्ट-विजय एक दल के प्रयत्नों की विजय थी इसमें सबका योगदान था। किसी का कम, किसी का ज्यादा।

पर एक बात अवश्य थी। तेनजिंग की विजय से साधारण आदमी बेहद खुश था। उसे लगता था, जैसे तेनजिंग नहीं वह स्वयं एवरेस्ट पर चढ़ा है।

क्यों?

इसलिए कि तेनजिंग पहले एक साधारण शेरपा थे। उन्हें कोई जानता तक न था। एडमंड हिलेरी, कर्नल हंट प्रशिक्षित पर्वतारोही थे। तेनजिंग तो साधारण आदमी थे। इसलिए उनकी सफलता से साधारण से साधारण व्यक्ति तक प्रसन्न था।

तेनजिंग अब देश के लाड़ले "हीरो" थे। लोग दिल खोलकर उनका स्वागत कर रहे थे। वे तेनजिंग की सहायता भी करना चाहते थे। अखबारों में उनकी सहायता के लिए अपील निकाली गई। एक अखबार ने उनके लिए नया मकान बनाने की पेशकश की। लोहा, लकड़ी, सीमेंट, ईंट देने का वायदा किया। एक अखबार ने उनके लिए धनराशि भी एकत्र की। तेनजिंग परेशान हो गये। वे पंडित नेहरू का पिता की तरह आदर करते थे। उन्होंने उनसे सलाह ली।

पंडित जी ने कहा, "देखो तेनजिंग। लोगों ने तुम्हारे लिए धन एकत्र किया, यह अच्छी बात है। उन्होंने इस तरह तुम्हारे प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया है। निस्संदेह, वे सब तुम्हारे प्रति आभारी हैं। पर इस तरह एकत्र किया गया धन दान होता है। मान लो, इस धन से तुमने एक मकान बनवाया। पर जब तुम वृद्ध हो जाओगे, तब लोग यह कहने में नहीं हिचकिचाएंगे कि तुम्हारा मकान जनता के चंदे से बना है। तुम यह बात पसंद नहीं करोगे। तुम्हारे पास तो घर है ही। तुम उसी की मरम्मत क्यों नहीं करा लेते। उसे ही सुंदर बना लो। यह धन स्वीकार मत करो।

कितनी अच्छी सलाह थी यह।

तेनजिंग ने उसे मान लिया प्रतीक रूप में थोड़ा सा धन लेकर सारा पैसा शेरपाओं के कल्याण के लिए एक ट्रस्ट को दे दिया। तेनजिंग शेरपाओं के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे। वे स्वयं शेरपा थे। शेरपाओं की जिंदगी के कष्टों को वे भली-भांति जानते थे।

प्रेरणा के स्रोत

तेनजिंग सरल थे, साहसी थे, छल-प्रपंच से दूर थे। बचपन में उन्होंने एक सपना देखा था। पर वे केवल सपना देखकर ही संतुष्ट नहीं हो गए। उन्होंने उसे साकार करने का प्रयत्न किया। सोलो-खुम्बू-क्या हम इस स्थान का नाम भी जान पाते? तेनजिंग ने अपनी सफलता से अपनी जन्मभूमि का गौरव बढ़ाया। पर तब शायद कोई विश्वास भी नहीं करता कि सोलो-खुम्बू का यह किशोर एक दिन एक नया इतिहास रचेगा। सबकी प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

तेनजिंग की जीवनी पढ़ते हुए मैं रोमांचित होता रहा। उन्होंने कितने कष्ट झेले। कितनी बाधाओं का सामना किया। पर वे निराश नहीं हुए। वे एवरेस्ट पर चढ़ना चाहते थे। यह उनकी बचपन की आकांक्षा थी। यह 37वें वर्ष में जाकर पूरी हुई। कोई और होता तो दुनियादारी में उलझ जाता। पर्वतारोहण के खतरों से भयभीत हो जाता। अपना सपना बिसार देता।

एक उक्ति है—

"जहाँ चाह वहाँ राह।"

"व्हेयर देयर इज़ विल, देयर इज़ वे।"

तेनजिंग की जीवनी बार-बार मुझे इस उक्ति की सत्यता की याद दिलाती रही।

तेनजिंग हमारे बीच नहीं है। पर वे अमर हैं। एवरेस्ट के साथ उनका नाम सदैव जुड़ा रहेगा। उस एवरेस्ट के साथ, जिसे वे चोमो-लुंगमा के नाम से जानते थे। जिसका वे आदर करते थे।

जिसके प्रति उनके मन में पूजा का भाव था।

एक प्रसंग याद आ रहा है। तेनजिंग के भतीजे गोम्बू ने सन् 1965 में एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ाई की थी। गोम्बू सन् 1963 में पहले भी शिखर तक हो आए थे। सन् 1965 में वे भारतीय दल के साथ थे। जब गोम्बू अभियान पर रवाना हुए तो तेनजिंग ने उन्हें बुद्ध की एक मूर्ति भेंट की। कहा, शिखर पर उसे बर्फ के मध्य रख देना।

गोम्बू ने ऐसा किया भी।

इस प्रसंग से पता चलता है कि तेनजिंग कितने धार्मिक थे। पर वे रूढिवादी नहीं थे। वे सभी धर्मों का आदर करते थे।

तेनजिंग को प्रसिद्धि घमंडी नहीं बना सकी। न उन्होंने अपनी जन्मभूमि को भुलाया। वे सोलो-खुम्बू को बेहद चाहते थे। उनकी एक इच्छा थी। सोलो-खुम्बू में लुकला के पास एक पर्वतारोहण स्कूल खोला जाए। आज वहाँ एक हवाई पट्टी है। एवरेस्ट के आधार शिविर से यह चार दिनों का रास्ता है। तेनजिंग का ख्याल था कि ऐसा स्कूल बहुत उपयोगी होगा। अब एवरेस्ट अविजित नहीं है। अनेक देशों के लोग शिखर तक पहुँच चुके हैं। फिर भी एवरेस्ट का आकर्षण अभी भी बना हुआ है। तेनजिंग चाहते थे कि सोलो-खुम्बू में एक स्कूल खुले ताकि अपनी जन्मभूमि में रह सकें। अपनी जन्मभूमि के लोगों के प्रति कुछ कर सकें।

अपने देश में तीन प्रकार के ऋण सबसे महत्वपूर्ण माने गए हैं। जीवन में मनुष्य को उन्हें उतारने का प्रयत्न करना चाहिए।

ये हैं — देव ऋण, ऋषि ऋण

और समाज ऋण।

तेनजिंग समाज—ऋण को उतारना चाहते थे।

हम सब पर समाज का बहुत बड़ा ऋण होता है। समाज जीवन में हमें बहुत कुछ देता है। इसीलिए हमें भी समाज को कुछ

देना चाहिए। उसकी सेवा कर, अच्छे नागरिक बन, मनुष्यता का नाम ऊँचा कर, हम यह ऋण उतार सकते हैं।

तेनजिंग ने यही किया।

उनकी जीवनी भी हमें यही प्रेरणा देती है।

वापसी : माँ की नसीहत

नीचे के शिविरों में लोग उनकी प्रतिक्षा कर रहे थे। वे सब उनकी सफलता से खुश थे।

चौथे नम्बर के शिविरों में तेनजिंग ने साथियों सहित रात बिताई। वहाँ उनके एक साथी ने चिट्ठी लिखी। यह चिट्ठी तेनजिंग की ओर से थी। उनकी पत्नी के नाम। तेनजिंग ने चिट्ठी पर दस्तखत किए। लिखा – "यह पत्र तेनजिंग की ओर से है। 28 मई को मैं और एक साहब एवरेस्ट शिखर पर पहुँच गए। आशा है, तुम प्रसन्न ही होगी। ज्यादा नहीं लिख सकता।"

अगले दिन वे सब आधार-शिविर पहुँचे। आधार शिविर यानी बेस कैंप। वहाँ भी खुशी का वातावरण था। तेनजिंग प्रसन्न भी थे और बेचैन भी। वे अपने गाँव थामे जाना चाहते थे। वहाँ उनकी माँ थी। परिवार के सदस्य थे। थामे वहाँ से पैंतीस मील दूर था। तेनजिंग थके हुए थे। पर मन में माँ से मिलने का उत्साह था। वे चल पड़े।

थामे में वे माँ से मिलें, बहन से मिले। परिवार के सदस्यों से भेंट की। तेनजिंग ने माँ को अपनी सफलता के बारे में बताया। वे बहुत खुश हुईं। फिर माँ ने बेटे को एक नसीहत दी। "मेंने कई बार तुमसे कहा, उस पर्वत पर मत जाना। पर तुम नहीं माने। अच्छा, अब दुबारा मत जाना।"

तेनजिग की माँ बचपन से एक बात सुनती आई थी। उनका विश्वास था – एवरेस्ट पर सोने की मैना रहती है। मणियों से जड़ा, सोने की अयालवाला एक सिंह भी वहाँ है।

उन्होंने बेटे से उनके बारे में पूछा।

उत्तर मिला –

''वहाँ न सोने की मैना थी, न सोने की अयालवाला सिंह।''

माँ ने फिर पूछा, ''क्या वहाँ से रोंगबुक मठ दिखाई देता था।''

''हाँ, वह दिखाई देता है।''

तेनजिंग दो दिन अपनी माँ के पास रहे। वे चाहते थे कि माँ भी उनके साथ दार्जिलिंग चले। उनकी माँ थामे में ही रहना चाहती थी। वे बोली, ''मैं चलना तो चाहती थी पर अब बहुत बूढ़ी हो गई हूँ। तुम्हें कष्ट ही दूँगी।''

तेनजिंग ने गाँव से पोर्टर एकत्र किए। फिर उनके साथ धागबोचे की ओर चल पड़े। वहाँ पर्वतारोहण दल के सदस्यों को पोर्टरों की जरूरत थी। राह में तेनजिंग अपनी बहन से भी मिले।

अब उनकी वापसी की यात्रा शुरू हुई। पहले नामचे बाजार, फिर काठमांडू।

काठमांडू से तीन मील पहले तेनजिंग की पत्नी और बेटियाँ उनकी राह देख रही थीं। तेनजिंग उनसे मिलकर बहुत खुश हुए।

काठमांडू में तेनजिंग ओर उनके साथियों का भव्य स्वागत हुआ। तेनजिंग का जन्म नेपाल में हुआ था। नेपाली जनता बहुत खुश थी। उसे तेनजिंग पर गर्व था। नेपाल नरेश श्री त्रिभुवन ने तेनजिंग को राजभवन में निमंत्रित किया। उन्हें ''नेपाल-तारा'' पदक पहनाया। यह नेपाल का सर्वोच्च सम्मान था।

स्वागत-सत्कार – ''तेनजिंग जिंदाबाद''

काठमांडू से तेनजिंग कलकत्ता रवाना हुए। उनके साथ उनका परिवार भी था। नेपाल-नरेश श्री त्रिभुवन ने अपना निजी विमान इस यात्रा के लिए दिया था।

डमडम : कलकत्ता का विमानतल। अपार भीड़ सबकी जबान पर एक ही नारा – "तेनजिंग जिंदाबाद!"

कलकत्ता में तेनजिंग राजकीय अतिथि रहे। उसके बाद दिल्ली रवाना हुए।

दिल्ली में भी उनका भव्य स्वागत हुआ।

तब पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री थे। उन्होंने पर्वतारोहियों के सम्मान में स्वागत-समारोह आयोजित किया।

तेनजिंग के लिए यह महान क्षण था। कभी न भुलाया जा सकने वाला क्षण।

तेनजिंग ने लिखा है–

"पंडित जी मेरे लिए पिता के समान थे। दयालु, उदार, आत्मीयता से भरे। औरों की भाँति मेरा उपयोग नहीं करना चाहते थे। बल्कि वे सोचते थे कि मैं खुश रहूँ।

स्वागत-समारोह के बाद पंडित जी ने तेनजिंग को अपने कार्यालय में बुलवाया। उन्होंने उन्हें लंदन जाने की सलाह दी। यही नहीं, उनकी पत्नी और बेटी की लंदन-यात्रा की भी व्यवस्था करवा दी।

वे तेनजिंग को अपने निवास-स्थान भी ले गए। वहाँ उन्होंने अपने वस्त्रों की अलमारी खोल दी। तेनजिंग को शेरवानी दी, पाजामा दिया, कमीजें दीं। उन्होंने अपने पिता स्व. मोतीलाल नेहरू की भी कुछ चीजें तेनजिंग को दीं। उन्होंने उनकी पत्नी अंग लहमू को एक सुंदर-सी नोटबुक दी। एक बरसाती भी दी। कहा, "लंदन में बरसात होती है।"

पंडित जी ने तेनजिंग को बहुत-सी चीजें दीं, पर गाँधी-टोपी नहीं दी। क्यों? वे जानते थे कि इस भेंट के कई अर्थ लगाए जाएँगे। उन्होंने तेनजिंग को राजनीति से भी दूर रहने की सलाह दी।

रोम, ज्युरिख और फिर लंदन।

लंदन में भी तेनजिंग का स्वागत किया गया। वहाँ वे कई दिन रहे। फिर वे स्विटजरलैंड गए। वहाँ उन्होंने प्रसिद्ध आल्प्स पर्वत पर भी चढ़ाई की।

एक दिन फिर वे फिर से भारत में थे। नई दिल्ली में तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें बुलाया। उनके अनुभव सुने। फिर भविष्य के लिए कुछ सलाह भी दी। तेनजिंग नेहरू जी से भी मिले।

फिर वे दार्जिलिंग लौट आए। अपने घर पर। अब वे न शेरपा थे, न "टाइगर"। वे थे एवरेस्ट विजेता।

तुम हजारों तेनजिंग बनाओगे

एवरेस्ट – विजय।

मनुष्य की एक आकांक्षा की पूर्ति।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह नई-नई चुनौतियाँ स्वीकार करता है। उन्हें पूरा करने के लिए खतरों से जूझता है। उसकी सफलता सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बनती है।

तेनजिंग की सफलता भी देशके लिए प्रेरणा का स्रोत बनी।

उन दिनों पश्चिमी बंगाल के मुख्यमंत्री थे डा. विधानचंद्र राय। वे चाहते थे कि दार्जिलिंग में एक केन्द्र खोला जाए। वहाँ भारतीय युवकों को पर्वतारोहण का प्रशिक्षण दिया जाए। उन्होंने तेनजिंग की राय ली। पंडित नेहरू से बात की। पंडित नेहरू का ख्याल था, शायद छात्र नहीं मिलेंगे। पर डा. राय को विश्वास था। आखिर एक पर्वतारोहण केन्द्र की स्थापना का निर्णय कर ही लिया गया।

चार नवम्बर 1954!

पं. नेहरू ने हिमालयन माउंटेनियरिंग इन्स्टीट्यूट का उद्घाटन किया। मेजर दयाल उसके प्रिंसीपल नियुक्त हुए।

तेनजिंग को उसका निदेशक बनाया गया।

पंडित नेहरू ने एक बार तेनजिंग से कहा था – "हम लोग हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट खोलेंगे तुम्हारे जिम्मे प्रशिक्षण का काम होगा। तुमने संसार के सबसे ऊँचे पर्वत पर चढ़ाई की है। तुम्हारा नाम तेनजिंग है। अब तुम हजारों तेनजिंग बनाओगे। जितने ज्यादा लोगों को प्रशिक्षण दे सकते हो, दो।"

तेनजिंग को पंडित नेहरू की यह बात सदा याद रही। उन्होंने मन लगाकर छात्रों को पर्वतारोहण की शिक्षा दी। पर उसके पहले उन्होंने स्वयं प्रशिक्षण लिया। स्विटजरलैंड में रोजेनलाउई नामक एक स्थान है। वहाँ पर्वतारोहण के प्रशिक्षण का एक स्कूल है। तेनजिंग ने यहीं प्रशिक्षण लिया। फिर उन्होंने मांट ब्लेंक पर्वत शृंखला में एक झील के पास एक गाँव में गाइड का कोर्स किया। इस गाँव का नाम है – चॉपेक्स।

प्रशिक्षण पूरा कर वे दार्जिलिंग लौट आए। इसके बाद वे निदेशक बने। इस केन्द्र में आज भी छात्र पर्वतारोहण की शिक्षा पाते हैं। इस केंद्र में प्रशिक्षण पाए छात्रों ने भी एवरेस्ट पर विजय पाई है।

सन् 1965 में एक भारतीय दल एवरेस्ट पर गया था। इस दल के नौ सदस्यों ने शिखर पर चढ़ने में सफलता पाई थी। इनमें से आठ सदस्यों ने हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट में प्रशिक्षण पाया था। उनकी सफलता में तेनजिंग का भी योगदान था। वे प्रत्येक छात्र की समस्या सुनते थे, उन्हें सुलझाते थे।

सद्भावना के राजदूत

तेनजिंग हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट के निदेशक तो थे ही, वे देश के सद्भावना के राजदूत भी थे।

भारत सरकार के निमंत्रण पर उन्होंने अनेक देशों की

यात्राएँ कीं। वे अमरीका भी गए और रूस भी। फिर वे आस्ट्रेलिया, सिंगापुर और यूरोप भी गए। उन यात्राओं में वे लोगों को अपने अनुभव सुनाते। यह काम उन्होंने अपने देश में भी किया।

एवरेस्ट विजय के बाद उन्होंने भारत के अनेक नगरों का दौरा किया। लेक्चर दिए। पर्वतों के प्रति लोगों का प्यार जगाया। विदेशों में भी उन्होंने यही किया। वहाँ भी अवसर मिलने पर वे पर्वतों पर चढ़ाई करते।

इसी बीच उन्होंने तीसरी बार विवाह किया। पहली पत्नी के निधन के बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया था। उनके पुत्रियाँ ही थीं। अतः उनकी पत्नी ने उनसे एक और विवाह करने को कहा। उनकी तीसरी पत्नी का नाम दखा फुटी है। उनसे तेनजिंग को पुत्र हुए। अमरीका-यात्रा में दखाफुटी भी तेनजिंग के साथ थीं। उन्होंने भी पर्वतों पर चढ़ाई की। तेनजिंग जहाँ जाते, एवरेस्ट-विजेता के रूप में उनका आदर किया जाता। सम्मान दिया जाता।

हिमालयन माउंटेनियरिंग इन्स्टीट्यूट में तेनजिंग ने अनेक वर्षों तक कार्य किया। सरकारी नियमों केकारण उन्हें आयु होने पर निदेशक पद से सेवा-निवृत होना पड़ा। लेकिन सरकार उनके अनुभव का लाभ उठाना चाहती थी। उसने उन्हें इंस्टीट्यूट का सलाहकार बना दिया। इस पद पर वे अंत तक कार्य करते रहे।

निरंतर यात्रा, निरंतर कार्य, उधर बढ़ती उम्र! तेनजिंग का स्वास्थ्य धीरे-धीरे बिगड़ने लगा।

1986 में वे दार्जिलिंग से नई दिल्ली आए थे। यहाँ आल इंडिया मेडिकल इन्स्टीट्यूट में उनकी चिकित्सा की गई। तब हमने अखबारों में उनका चित्र देखा था। हमने उनकी युवावस्था के चित्र भी देखे थे। अब वे बूढ़े हो चुके थे, पर उनकी आँखों में

वही चमक थी। स्वस्थ होकर वे दार्जिलिंग लौट गए।

8 मई 1986 को सारे देश ने एक दुखद समाचार सुना।

एवरेस्ट विजेता तेनजिंग नहीं रहे।

उनके निधन से सबको बेहद दुःख हुआ। वे व्यक्ति नहीं, संस्था थे। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा अनेक नेताओं ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया।

तेनजिंग बौद्ध धर्म को मानते थे। उसी के अनुरूप उनकी अंत्येष्टि की गई।

14 मई 1986

प्रातः साढ़े आठ बजे उनकी शवयात्रा निकली। उसमें हजारों लोग शामिल हुए। सर एडमंड हिलेरी भी पहुँचे। ठीक साढ़े बारह बजे तेनजिंग की चिता को अग्नि दी गई। लोगों की आखें भर आईं। एक युग का अंत हो गया।